अन्तिम हिन्दू

(एक गम्भीर चेतावनी)

लेखक

पुरूषोत्तम योग

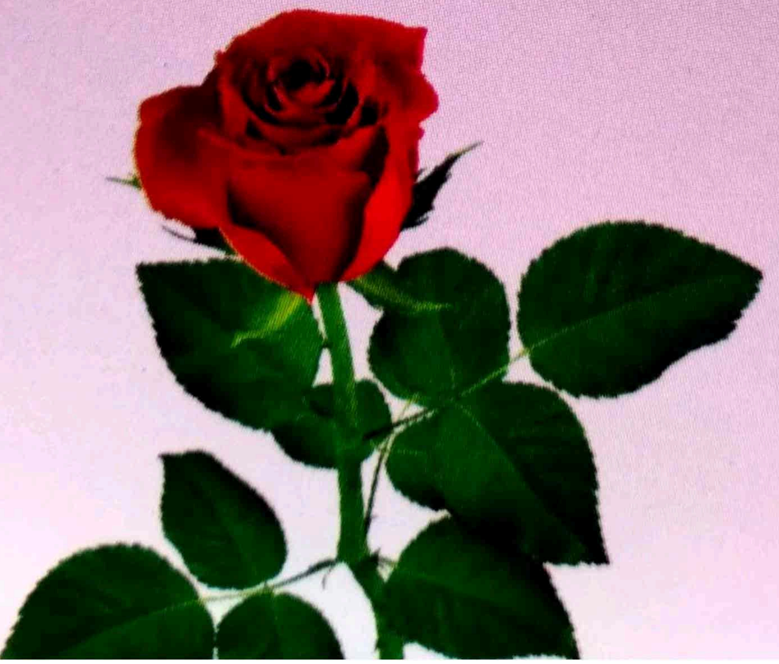

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं०	विवरण	पृष्ठांक
१.	अन्तिम हिन्द	७
२.	भारत के संवेदनशील क्षेत्रों में- मुसलमानों की जनसंख्या का बढ़ता प्रतिशत (तालिका)	३०
३.	अन्तिम हिन्दू (मूल लेख बंगला से हिन्दी- श्री शिव प्रसाद राय कृत)	३१
४.	संकट का पूर्वाभास	३१
५.	फांसी पर लटके हिन्दू सीने पर गोलियाँ खाई हिन्दुओं ने और हुआ क्या?	३४
६.	जनतन्त्र, समाजवाद और धर्म निरपेक्षता	३७
७.	हिन्दू जनसंख्या का ह्रास	३९
८.	'जगत जननी' की करतूत	४०
९.	हिन्दू समाजः खुला शिकारगाह	४२
१०.	यदि हिन्दू बहुमत में न रहा तो?	४४
११.	यदि हिन्दू असंगठित रहे तो?	४७
१२.	हिन्दुओं की संकीर्ण स्वार्थपरता	४८
१३.	क्या हिन्दू समाज का संगठन करना संकीर्णता है?	४९
१४.	संघे शक्तिः कलौयुगे	५०
१५.	भारत माँ की पूजा यानी समाज की सेवा	५०
१६.	देश के उत्थान के लिए स्वस्थ हिन्दू समाज आवश्यक है तथा हिन्दू संगठन को सहयोग देना हर हिन्दू का कर्त्तव्य है	५२

क्र.सं०	विवरण	पृष्ठांक
१७.	हिन्दू समाज उठने के लिए अंगड़ाई ले रहा है	५४
१८.	हम दो, हमारे दो तथा हम दो हमारे पच्चीस	५५
१९.	गोरक्षा का सवाल	५७
२०.	अपमानजनक घटनाएँ	५९
२१.	आत्महत्या पर कटिबद्धः हिन्दू समाज-(प्रोफेसर डॉ. रघुवीर कृत)	६४
२२.	ब्रिटिश साम्राज्यवाद से छुटकारा	६५
२३.	राष्ट्र का माप-दण्ड	६६
२४.	तलवार के भय से धर्मान्तरित	६६
२५.	प्रेम ईर्ष्यालु होता है	६७
२६.	भाषा का प्रश्न	६८
२७.	आज हम अपने ही देश में विदेशी बनकर रह रहे हैं	७०
२८.	मुसलमानों द्वारा कुछ जहरीले सन्देश	७१
२९.	विचित्र हिन्दू	७३
३०.	यह हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक-गाज़ी और शहीदों की मजारें	७३
३१.	किन्तु वास्तविकता क्या है?	७४
३२.	बहराईच में शहीदः सालार महमूद गाज़ी की मज़ार	७५
३३.	लखनऊ के शहीदः खम्मन पीर बाबा	७५
३४.	अजमेर केः मईनुद्दीन चिश्ती	७५
३५.	अफजल खाँ कौन था?	७७
३६.	आर्ष हिन्दू धर्म ग्रन्थों की जानकारी	७७
३७.	परमपिता परमात्मा से प्रार्थना	८०

अन्तिम हिन्दू

एक समय भयंकर बाढ़ आई। लोग जान बचाने के लिये ऊंची जगहों पर, पेड़ों पर, और मकान की छतों पर जा बैठे। फिर उन लोगों को बाढ़ से निकालने का कार्य प्रारम्भ हुआ। कुछ साहसी लोग तैर-तैर कर उन बाढ़ग्रस्त लोगों के पास जाते और उन्हें सहारा देकर बाहर निकाल लाते।

स्थानीय गिरजाघर के पादरी भी चर्च की गगन चुम्बी मीनार पर चढ़े बैठे थे। कुछ लोग तैर कर उनके पास पहुँचे और उन्हें बाहर निकालने का प्रस्ताव दिया।

''मुझे अपने परमेश्वर यीशू मसीह पर पूरा विश्वास है'' पादरी ने कहा- ''वह मुझे बचायेगा।'' वह लोग वापिस चले गये।

पानी और ज्यादा बढ़ गया तो नावें लाई गईं। नाव लेकर एक नाविक पादरी के पास पहुँचा और विनयपूर्वक बोला-

''हे सम्मानित पिता! पानी बढ़ रहा है। नदी की धारा भी तेज होती जा रही है। आप नाव में उतर आइये। पादरी ने चिल्ला कर कहा-

''क्या तुझे प्रभु में भरोसा नहीं है? मुझे उस पर पूरा भरोसा है। वह मुझे मरने नहीं देगा।'' नाविक भी वापिस चला गया।

पानी और बढ़ गया। धारा तेज़ हो गई। अब नाव का जाना भी दुष्कर हो गया। पादरी उस गिरजाघर की मीनार पर शान्ति पूर्वक बैठा हुआ प्रभु का स्मरण कर रहा था। शासन को पता चला तो तुरन्त एक हेलीकाप्टर पादरी को पानी से बाहर निकाल लाने के लिये भेजा गया।

हेलीकाप्टर के पायलट ने एक रस्सी पादरी की ओर गिराई और चिल्ला कर कहा-

पिता! रस्सी कस कर पकड़ लो। मैं आपको ऊपर खींच लेता हूँ। रात होने वाली है। सूर्योदय से पहले अब अन्य कोई दूसरा साधन उपलब्ध न हो सकेगा।

पादरी को उन लोगों के अविश्वास पर बहुत क्रोध आया। उसने कहा-

"कैसा मूर्ख है तू? तू मुझे क्या बचायेगा? मेरा परमेश्वर ईशा मसीह क्या मुझे नष्ट हो जाने देगा? मैंने जीवन भर उसका स्मरण किया है। मेरा उसमें पूर्ण विश्वास है।"

हेलीकाप्टर वापिस चला गया।

रात्रि में नदी की तेज़ धारा ने उस मीनार को धराशायी कर दिया। पादरी मर कर परमात्मा के सामने पहुँचा। उसने दोनों हाथ सीधे ऊपर की ओर उठाकर कहा-

"हे पिता! मैंने सदा तेरा स्मरण किया। कोई पाप नहीं किया। तुझ पर पूर्ण विश्वास किया और तूने मुझे नदी में डूब जाने दिया। संसार में कैसी बदनामी होगी तेरी? सब कहेंगे भगवान ने उसकी रक्षा नहीं की, जिसने केवल उसी में विश्वास रखा।"

परमेश्वर यह सुनकर बड़ी जोर से हँसा और कहा-

"हे पुत्र! तू मेरी बदनामी की चिन्ता मत कर। मैंने तुझे बचाने को तैराक और गोतेखोर भेजे। फिर नाव भेजी। फिर एक हेलीकाप्टर भेजा। बता मैं और क्या करता?"

आप हँसेंगे और कहेंगे! "पादरी मूर्ख था। उसे बचाने को तीन सहायक तो भेजे गये। परमात्मा और क्या करता?" किन्तु इससे भी विस्मयकारी एक कथा और भी है। यह एक पादरी की

काल्पनिक कहानी नहीं है। यह हमारी आपकी, सबकी सत्य कथा है। यह करोड़ों लोगों की एक समाज की करूण कहानी है और वह है इस बेचारे कहे जाने वाले हिन्दू समाज की।

जब संसार का अंतिम हिन्दू भगवान के सामने पहुँचा तो पादरी की तरह उसने भी दोनों हाथ ऊपर की ओर उठाकर आरोप लगाया कि-

''हे पिता! मेरी जाति ने तेरे लिये विशाल मंदिर बनाये। तेरी सोने तथा हीरों की मूर्तियाँ स्थापित की। करोड़ों रुपये के सोने और अलंकारों से तुझे ढक दिया। करोड़ों रुपये के प्रसाद के भोग तुझे लगा दिये। रात दिन धर्म ग्रन्थों के अखण्ड पाठ किये। तूने विश्राम करने के लिये हमें रात्रि दी थी। हमने उसमें भी जाग-जाग कर निरंतर तेरे कीर्तन किये। न स्वयं सोये न पड़ोसियों को सोने दिया। कैसा अद्‌भुत प्रचार किया तेरे नाम का? मेरी जाति के करोड़ों मनुष्यों ने तेरी भक्ति में शरीर सुखा डाले।

भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक तपती गर्मी में, कंपकंपाती बर्फीली ठंड में पृथ्वी पर लेट-लेट कर तेरे धामों की तीर्थ यात्रायें कीं। और तूने पहले मेरी जाति को १२०० वर्ष तक विधर्मियों का गुलाम बनाया। और अंत में मेरी जाति का नामों निशान ही इस धरती के ऊपर से मिटा दिया।

हे प्रभु! तूने ऐसा क्यों किया? तूने विधर्मी विदेशी आतताइयों का और आक्रान्ताओं का साथ दिया और अपने भक्तों की रक्षा नहीं की? कहाँ गया तेरा वह प्रण कि-

'मेरे भक्त का नाश कभी नहीं होता।'

परमेश्वर उस हिन्दू का आरोप सुनकर मंद-मंद मुस्कुराते रहे। फिर बोले-

"पुत्र मैं अपने भक्तों की रक्षा उनके शत्रुओं से तो कर सकता हूं किन्तु यदि वह स्वयं ही अपने शत्रु बनकर अपना विनाश करने लगें तो मैं क्या करुं?

कृष्णवंशी यादवों को किसी ने नष्ट नहीं किया था। वह आपस में लड़कर स्वयं ही नष्ट हो गये थे। सुनोगे हिन्दुओं की रक्षा के कितने उपाय मैंने किये? कितने साधन उन्हें उपलब्ध कराये?"

'सुनो! मैंने तुम लोगों को पूरे संसार का अनुपम भू-भाग दिया। किसी धातु किसी सम्पदा का नाम तो लो जो उस देश की धरती के नीचे, पहाड़ों अथवा समुद्र में न मिलती हो। ऐसी उपजाऊ भूमि दी जिसमें सभी वनस्पतियां, वृक्ष, फल, ईंधन और श्रेष्ठ इमारती लकड़ी पैदा होती है। नदियों में और भूगर्भ में इतना जल दिया कि जिसको देखकर मनुष्य क्या देवता भी ईर्ष्या करें।

इतना ही नहीं, मैंने उसे सहज सुरक्षित करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। संसार का सबसे ऊंचा और विशाल पर्वत उत्तर में और तीन ओर से समुद्र उसकी रक्षा करता है। अब बोलो इससे अधिक भौतिक सम्पदा मैं तुम्हें और क्या देता?"

भगवान अविरल रूप में कहते चले गये कि-

"अब सुनो! ज्ञान विज्ञान और नीति की बातें। मैंने तुम्हें वेदों के रूप में अति कल्याणमयी वाणी दी और तुम्हें सावधान किया कि-

"हे पुत्रों! यह मेरी कल्याणमयी वाणी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, भृत्य, स्त्रियों तथा अति शूद्रादि जनों के लिये भी है। इससे किसी को भी वंचित मत करना। सभी को इसका ज्ञान कराना।" किन्तु तुमने ठीक इसका उल्टा किया। अपने क्षुद्र स्वार्थ

के लिये इसके अर्थों का अनर्थ किया। स्त्री, शूद्र एवम् अंत्यजों को तो इससे पूर्णतया वंचित ही कर दिया।

स्त्रियाँ इस ज्ञान के अभाव में मूढ़ हो गईं। स्त्रियाँ ही माता होती हैं। वह ही संतान की प्रथम गुरु होती हैं। जब वह मूढ़ हो गईं तो तुम्हारी भावी संतति भी पीढ़ी दर पीढ़ी मूढ़ होती चली गई।

अब तुम्हीं जवाब दो, क्या दूसरा कोई समाज है जो लगातार १२३५ वर्षों तक गुलाम* रहा हो? यह इसी मूढ़ता का फल था। इसमें मेरा क्या दोष है?

इस ज्ञान विज्ञान के अभाव में आर्य लोग अनार्य हो गये। स्वयं भारत में धर्म की निराली-निराली व्याख्यायें की गईं। धर्म के नाम पर अधर्म का, ज्ञान के नाम पर अज्ञान का बोलबाला हो गया। फिर बताओ तुम किस मापदंड के आधार पर मेरे भक्त रह गये?

''स्वभाववश मुझे तुम पर दया आई। मैंने मनु जैसे स्मृतिकार को भेजा। उसने तुम्हें राज्य व्यवस्था के नियम बताये। उसने तुम्हें बताया था कि जब सब सोते हैं तब दंड जागता है। इसलिये दुष्टों

---

* भारत के १२३५ वर्षीय स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास जो पाँच भागों में उपलब्ध है, जिसके लेखक रिसर्च स्कालर श्री डॉ० राकेश कुमार आर्य, एडवोकेट हैं, जिनके द्वारा गहन अध्ययन एवं अन्वेषण के द्वारा यह पता लगाया गया है कि इन १२३५ वर्षों में सम्पूर्ण भारत कभी गुलाम नहीं रहा। इस तथ्य को जानने के लिए यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है, जिसमें एक भी लाईन बिना प्रमाण के नहीं दी गई। इच्छुक सज्जन सम्पर्क करें-

अतुल गुप्ता

प्रबन्धक, विक्रय विभाग

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, गाजियाबाद

को दंड देना ही राजधर्म है।

जब तक तुम्हारे शासक दुष्टों को निर्मूल करते रहे तुम सुरक्षित रहे। उसने तुम्हें यह भी सावधान किया था कि सभा में या तो प्रवेश ही न करो और यदि प्रवेश करो तो वहाँ किसी भी मूल्य पर सत्य द्वारा झूठ को उजागर करो क्योंकि यही सभासद का कर्त्तव्य तथा धर्म है। यदि वह ऐसा नहीं करता तो पापी है। क्या तुमने इस पर आचरण किया?

तुमने तो मनु के उपदेशों को भी प्रदूषित करने से नहीं छोड़ा। स्वार्थपूर्ति के लिये अपनी ओर से उसमें सैकड़ों पापपूर्ण श्लोक जोड़कर पूरी स्मृति को ही दूषित बना डाला। अपने ही समाज के एक बड़े वर्ग को पशुओं से भी बदतर जीवन जीने को बाध्य कर दिया।

तुम्हारी अज्ञानावस्था को देखकर मैंने बाल्मीकि और व्यास जैसे कथाकार भेजे जो महापुरूषों की कथाओं द्वारा तुम्हें सन्मार्ग दिखा सकें। तुमने अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिये उनकी कला कृतियों में भी अपनी ओर से सहस्रों श्लोक मिलाकर उन्हें भ्रष्ट कर डाला।

देवदासियों के नाम पर अबोध बालिकायें वेश्यावृत्ति में उतार दी गई। तीर्थस्थान जहाँ लोग तपस्या के लिये जाते थे, वे सभी व्यभिचार के अड्डे बन गये। निरीह पशुओं की बलि दी जाने लगी। मंदिर जो आज मन्दिर न रहकर सभी बूचड़खाने बन गये।

मुझे तुम पर फिर दया आई। मैंने गौतम बुद्ध को भेजा। उन्होंने अहिंसा तथा कर्म-फल-चक्र की शिक्षा दी। भारतवासियों ने उस शिक्षा को भी तोड़ मरोड़ डाला। बुद्ध ने अहिंसा के अर्थ यह कब किये थे कि आततायियों और आक्रमणकारियों से भी युद्ध मत करो? किन्तु भारत के बौद्धों ने यही किया।

सिंध के अरब आक्रमण के समय बौद्धों ने अहिंसा के नाम पर आक्रमणकारियों का सहयोग किया।

गौतम बुद्ध की मूर्तियों से देश को पाट तो दिया, किन्तु उनके उपदेशों की अवहेलना की। उनके प्रेम और त्यागमय जीवन का अनुकरण नहीं किया। उनके कर्म-फल-चक्र की उपेक्षा की। फलस्वरूप उन्हीं आतताइयों ने बुद्ध की मूर्तियों को तोड़ डाला। बड़ी संख्या में बौद्धों को इस्लाम धर्म बलात स्वीकार करना पड़ा।

जापान, चीन इत्यादि देशों ने जिस बौद्ध धर्म के बल पर संगठन और शक्ति का संग्रह किया वह तुम्हारी गुलामी का कारण बना।

तुमने ठीक ही कहा है। तुमने मेरी करोड़ों रुपये की कल्पित मूर्तियाँ बना-बना कर करोड़ों रुपये उनके मंदिर, आभूषण और भोग पर खर्च कर डाले। क्या तुमने कभी सोचा कि यही तुम्हारे पतन और अन्त में नष्ट हो जाने का कारण है?

तुम यह मंदिर और मूर्ति बनाते रहे। आतताई उन्हें ध्वस्त करते रहे। लूटते रहे। किन्तु मूर्तियां बना-बना कर स्थापित् करने, मंदिर बनाने तथा वहाँ सोना, जवाहरात संचित करने का तुम्हारा मोह भंग नहीं हुआ।

देखो मोहम्मद बिन कासिम, अकेले मुल्तान के सूर्य मंदिर से १३५०० मन सोना लूट ले गया। महमूद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर से इतना सोना और हीरे-जवाहरात लूटे कि जिन्हें देखकर गजनी के लोगों की आँखें फटी की फटी रह गई।

अलाउद्दीन खिलजी दक्खिन के मंदिरों से ६०,००० मन सोना लूट लाया। इन लुटेरों ने मंदिरों की इस सम्पत्ति का उपयोग सेना की भरती और फिर तुम्हारे समाज को नष्ट करने में किया।

अब्दाली को लूट का सामान ढोने के लिए अपनी तोपें छोड़ देनी पड़ी जिससे सेना के हर चौपाये और दुपाये का उपयोग सोना, रत्न, हीरे और जवाहरात इत्यादि ढोने में किया जा सके।

देखो समकालीन मुस्लिम इतिहासकार लिखते हैं कि-

दिल्ली के आस-पास किसी भी नागरिक के पास उसने एक गधा तक भी न छोड़ा।

स्वतंत्र भारत में भी तुमने विशाल मंदिर तो बनाये किन्तु अपनी संस्कृति और समाज की रक्षा के लिये क्या कोई शिक्षा संस्थान भी खोला?

मैं पूछता हूँ एक सहस्र वर्षों तक तुम्हें यह क्यों नहीं सूझा कि उस अपार धन-सम्पत्ति से तुम सेना और हथियार इकट्ठे करते। संगठन के लिये गांव-गांव में अखाड़े तथा शस्त्र व शास्त्र शिक्षा का प्रबन्ध करते। ऐसी पाठशालायें खोलते जिनमें शस्त्र विद्या तथा युद्ध कौशल सीख कर अर्जुन जैसे धनुर्धर, कर्ण जैसे दानी, भीम जैसे मल्ल, कृष्ण जैसे धर्म की स्थापना करने वाले, राजनीतिज्ञ, कौटिल्य जैसे कूटनीतिज्ञ सहस्रों की संख्या में निर्मित होते?

मुसलमानों और ईसाईयों ने तुम्हारे देश में अपनी संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिये सहस्रों मदरसे तथा स्कूल खोल डाले। वहाँ हिन्दू संस्कृति के मर्म पर चोट पहुँचाने की शिक्षा पा पाकर लाखों भारतीय बच्चे प्रतिवर्ष युवा बन कर देश भर में फैलते रहे। तुमने अपनी भावी पीढ़ी में इन दोनों संस्कृतियों से श्रेष्ठ हिन्दू संस्कृति की छाप जमाने के लिये क्या किया?

क्या तुमने उसकी शिक्षा का भार विदेशियों, निरंकुश तथा अहिन्दू लोगों के हाथ में नहीं छोड़ दिया? जब भारत गुलामी से

स्वतंत्र हुआ तो यहाँ कुल ८८ मुस्लिम मदरसे थे और कुछ गिने-चुने मिशनरी ईसाई स्कूल। ५० वर्ष से भी कम समय में भारत में ३०,००० मदरसे और असंख्य ईसाइयों के अंग्रेजी स्कूल खुल गये।

कितना महत्वपूर्ण अन्तर था तुम्हारे पूर्वजों द्वारा अर्जित ज्ञान में और तुम्हारे विधर्मी आक्रमणकारियों में। उनके धर्म का सारा भवन टिका था मेरे द्वारा निर्मित एक मनुष्य के ऊपर। वह समझते थे कि मेरी कृपा प्राप्त करने के लिये उनमें से किसी एक पैगम्बर अथवा धर्म गुरु पर अंध विश्वास होना ही पर्याप्त है। फिर उनके सभी दुष्कर्मों और पापों को मैं उनके पैगम्बरों की मध्यस्थता के कारण क्षमा कर दूँगा। और तुम्हें बताया गया था कि कर्म तो अच्छे हों या बुरे भोगने ही पड़ेंगे। मेरे तुम्हारे बीच में कोई मध्यस्थ नहीं है। मैं भी अपने नियमों में बंधा हुआ हूँ।

मैं तो सत चित आनन्द हूँ। तुम मेरे गीत गाओ अथवा मुझे गाली दो, मंदिर बनाओ या तोड़ो उससे न मैं प्रसन्न होता हूँ न क्रुद्ध।

यह दूसरी बात है कि मेरे गुणगान कर मेरे शाश्वत गुण तुम अपने अन्दर उत्पन्न करो। तुम्हें तो तुम्हारे कर्मों का फल ही प्राप्त होगा। तुम जड़ की पूजा करोगे तो जड़ता की ओर, चैतन्य की पूजा करोगे तो चैतन्य की ओर बढ़ते जाओगे। क्या गीता में कृष्ण ने तुम्हें नहीं बताया था कि-

यान्ति देवव्रता देवान्, पितृन्यान्ति पितृवृताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या, यान्ति मद्याजिनोऽ माम्॥

(श्रीमद्भगवदगीता अध्याय ९ श्लोक २५)

जो देवताओं की पूजा करते हैं वह देवताओं को, जो पितरों

की पूजा करते हैं वह पितरों को, जो भूतों और जड़ पदार्थों की पूजा करते हैं वह जड़ता को प्राप्त होते हैं। केवल वही मुझे प्राप्त होते हैं जो मेरी पूजा करते हैं।

ऐसा कर्म फल सिद्धान्त तुम्हारे पास था किन्तु तुमने उसके विरूद्ध जड़ पदार्थों की पूजा, मृत पुरुषों की कब्रों, समाधियों और लक्ष्मी की पूजा की। फलस्वरूप, मृत्यु, जड़ता एवम् धन ही तुम्हारे पल्ले पड़ा।

तुम्हें स्पष्ट बताया गया था कि-

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानाम च निरादरः।
त्रीणि तत्र प्रविशन्ति, दुर्भिक्षम, मरणम, भयम॥

(महाभारत)

जो समाज उनकी पूजा करता है जो पूजा के योग्य नहीं हैं और उनका निरादर करता है जो पूजा के योग्य हैं उस समाज को दुर्भिक्ष, मृत्यु और भय भोगना पड़ता है।

"मैंने तुम्हें विद्याध्यन और स्वाध्याय के लिये आदेश दिया था। इसमें प्रमाद न करने को कहा था, यथा- **"स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमादित्व्यं।"**

अर्थात् स्वाध्याय और उससे प्राप्त ज्ञान के प्रचार प्रसार में प्रमाद मत करना।

क्या तुमने अपने और विदेशी आक्रमणकारियों के धार्मिक विश्वासों और इतिहास का स्वाध्याय किया? जब स्वाध्याय ही नहीं किया तो उसका प्रचार प्रसार क्या करते? उसका प्रतिकार कैसे करते?

ज्ञानार्जन के स्थान पर तुमने सरस्वती की पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी आराधना प्रारम्भ कर दी। शक्ति की उपासना की

जगह उसकी भी पत्थर की कपोलकल्पित मूर्ति बनाकर पूजा करना ही अपना ध्येय बना लिया। अपने शस्त्रास्त्र इन निर्जीव मूर्तियों को पकड़ा कर तुमने अपनी रक्षा का भार उन पर छोड़ दिया।

जब महमूद गजनवी के खूनी लुटेरों का टिड्डी दल सोमनाथ की ओर बढ़ रहा था तब तुम्हारे मूर्ख पण्डे अंध विश्वासी रक्षक मंदिर की दीवारों पर बैठकर उनका उपहास उड़ा रहे थे कि पास आते ही सोमनाथ उन्हें भस्म कर देंगे। वह सब पण्डे गाजर मूली की तरह काट दिये गये। सोमनाथ की प्रतिमा तोड़ कर गजनी में मस्जिदों की सीढ़ियों पर और बाजार में डाल दी गई। जिससे कि वह मुसलमानों द्वारा पद दलित और अपमानित होती रहे। सोमनाथ का मंदिर न जाने कितनी बार बना और टूटा।

राजनीति में कभी कभी भूल हो जाती है। किन्तु उसी भूल को बार-बार दोहराने वाले समाज को जीने का अधिकार नहीं होता। तुमने तो गायत्री छंद में दिये गये एक ज्ञानमय मंत्र के अर्थों पर आचरण न कर उसकी भी मूर्ति बना डाली।

हे पुत्र! स्वर्ण की गउवें दूध नहीं देतीं। पत्थर के सिंह एक चूहा भी नहीं मार सकते। यह बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आई?

तुम्हारा मंदिरों का मोह और पत्थर के देवी देवताओं पर विश्वास बना रहा। जितना कोलाहल तुम्हारे मंदिरों में होता था उतना तो हाट बाजार में भी नहीं होता। और कौन जाता था तुम्हारे इन मन्दिरों में? क्या करते थे वह वहाँ? कितनी देर? वहाँ अधिकतर जाते थे निकट आती मृत्यु से भयभीत वृद्ध और वृद्धायें? जो लोग आते थे वह भी वहाँ उतनी देर ही ठहरते थे

जितना समय पुजारी को उनका प्रसाद मूर्ति पर चढ़ाने में लगता था। प्रसाद चढ़ा कर और शेष भाग लेकर उन्हें अपने व्यवसाय पर जाने की जल्दी रहती थी।

तुम्हारे पुजारी भी अधिकतर ऐसे ही थे जिनका शास्त्र अध्ययन ना के बराबर था। जो ज्ञान उन्हें स्वयं नहीं था वह तुम्हें क्या बताते? कहीं कहीं थोड़ा भजन कीर्तन होता था जिसका भाव होता था ईश्वर भक्ति अथवा पौराणिक कथायें- कहानी मात्र सुनने का चस्का, जो एक मनोरंजन मात्र ही होता था।

प्रवचन यदि कहीं होता भी था तो केवल यह बताने के लिये कि संसार अनित्य है। सब माया है। छलावा है। जबकि सत्य यह है कि प्रवचन करने वालों और सुनने वालों के लिये वास्तव में संसार ही सब कुछ था। शेष सब झूठ था।

वह अपनी जाति के लिये उस झूठे संसार का, उस माया का, जो उन्होंने उचित अनुचित का ध्यान किये बिना संचित किया था, एक पैसा भी समाज के लिये खर्च करने में संकोच करते थे। क्या वहाँ कभी भी इस पर प्रवचन होता था कि हिन्दू धर्म के मूल सिद्धांत क्या हैं?

वह दूसरे मत मतान्तरों से क्यों श्रेष्ठ है? होता भी कैसे वहाँ प्रवचन करने वालों को ही इसका ज्ञान कहाँ था?

इसके विपरीत मस्जिदों में क्या होता था? व्यस्क पुरुषों का ५३ प्रतिशत समाज वहाँ दिन में पाँच बार एक दम शांति के साथ मेरा ध्यान करता था? इनमें अधिकांश युवक और किशोर होते थे। उसके पश्चात् वहाँ इस्लाम धर्म की विधिवत् शिक्षा प्राप्त इमाम श्रोताओं को इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों का उपदेश करता था। उन्हें बताता था कि इस्लाम दूसरे धर्मों से श्रेष्ठ

क्यों है।

समाज में फैले इस्लाम विरोधी रीति रिवाजों की वहाँ कड़ी आलोचना होती थी। उनको मिटाने पर बल दिया जाता था। साधन जुटाये जाते थे। गरीब से गरीब मुसलमान अपने समाज के लाभ के लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने को तत्पर रहता था। और तो और समाज का वातावरण बिगाड़ने वाले कानूनी मुकदमें भी वहाँ सामाजिक दबाव डाल कर सुलह कराये जाते थे।

समाज की सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं से किस प्रकार जूझा जाये उस पर विचार होता था। सत्ता प्राप्त करना धर्म के प्रचार प्रसार के लिये आवश्यक है। इसलिये सत्ता पर किस प्रकार कब्जा किया जाये, उसके लिये ध्यानपूर्वक कुशल लोगों द्वारा सुनियोजित ढंग से अमल होता था। वहाँ वह स्थापित् लाखों मकतबों में चार-चार पाँच-पाँच साल के बच्चों को कट्टर इस्लाम की शिक्षा दी जाती थी। कुफ्र और काफिरों से घृणा करना सिखाया जाता था तथा उनके अन्दर इस्लाम के लिये मर मिटने की भावना भरी जाती थी।

तुम्हारे समाज की मूर्खता और आपसी फूट के कारण मुस्लिम राज्य आया। उन्होंने तुम्हारे शास्त्रों का तुम्हारे चरित्र का गहन अध्ययन किया।

तुम्हारी पुस्तकों के संस्कृत से फारसी में अनुवाद कराये। तुम्हारी कमजोरियों से लाभ उठाया। तुम्हारी पाठशालायें और पुस्तकालय इसलिये ध्वस्त कर दिये कि कहीं तुम अपने बच्चों को अपने धर्म और इतिहास की शिक्षा देकर उनकी शक्ति के लिए खतरा न बन जाओ।

तुमने उनके धर्म और इतिहास का, उनके संगठन का, उनकी

युद्ध और सैन्य प्रणाली का कोई अध्ययन नहीं किया। तुम परस्पर एक दूसरे के साथ विश्वासघात करने में ही अपनी भलाई समझते रहे।

वह एक-एक कर तुम्हें परास्त करते रहे। मैंने तुम्हें जो संगठन सूत्र दिया था उस पर तुमने कितना आचरण किया? करोड़ों लोग मुसलमान बनाये गये। यदि उन्होंने अपने हिन्दू धर्म में वापिस* आने की गुहार भी की तो वह अस्वीकार कर दी गई।

तुम्हारी निरन्तर पराजय से उत्पन्न हताश दशा को देखकर मैंने प्रताप, दुर्गादास, शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह, जैसे योद्धा और रासबिहारी बोस, जितेन्द्रनाथ, शचीन्द्र नाथ सान्याल, भगत सिंह, पिंगले, सावरकर, मदनलाल धींगरा जैसे सैंकड़ों क्रान्तिकारी युवक भेजे। एक बार को लगा कि तुम भारत में फिर से धर्म पर आधारित, संसार के लिए आदर्श राज्य स्थापित् करोगे। किन्तु तुम आपस में मिलकर न बैठ सके।

तुम यह भूल गये कि वसुन्धरा वीर भोग्या है कायर भोग्या नहीं। तुमने अहिंसा का मर्म न समझ कर अहिंसा के नाम पर फिर कायरता को वरण किया। समाज को शौर्य और प्रतिघात की क्रान्तिकारी शिक्षा नहीं दी।

फिर मुसलमान निर्बल हो गये तो अंग्रेजों ने उन्हें परास्त कर

---

* उदाहरण के रूप में आप मेरे द्वारा लिखित पुस्तक ''काला पहाड़'' अवश्य पढ़ें, जिसमें हिन्दुओं की भयंकर भूलों का परिणाम दर्शाया गया है, जिन्हें पढ़कर आपके शरीर में रौंगटे खड़े हो जायेंगे।

निवेदकः

लाजपतराय अग्रवाल

(वैदिक मिशनरी)

तुम दोनों पर राज्य किया। उन्होंने भी तुम्हारी पुस्तकों का गहन अध्ययन किया।

जिन धर्म पुस्तकों को तुमने अंधेरी कोठरियों में बाँध-बाँध कर रख दिया था उन पुस्तकों को उन्होंने मुह मांगे पैसे दे दे कर खरीदा। उन दुर्लभ ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद करवाया। उनमें दिये गये ज्ञान से लाभ उठाया। तुम्हारी कमजोरियों को समझा और तुम्हारे कमजोर मर्म स्थलों पर चोट की। उन्होंने भी करोड़ों लोगों को ईसाई बनाया।

तुम्हारे द्वारा सहस्रों वर्षों से प्रताड़ित धर्म बन्धु मुसलमान ईसाई बनकर तुम्हारी ही जड़ खोदने लगे। १२०० वर्ष पहले भी इन तथाकथित धर्मों की वास्तविकता को समझे बिना ही स्वयं तुम्हारे शासकों ने भारत में मस्जिदें तथा गिरजाघर सरकारी धन से निर्माण कराये थे।

मुस्लिम देशों से व्यापारिक लाभ उठाने के लिये स्वयं इस्लाम धर्म स्वीकार किया तथा अपने नाविकों को भी कराया था। विदेशी नाविकों को हिन्दू स्त्रियाँ दे देकर भारत में बसाया था। उन्हीं की संतानों अर्थात् मोपलों ने आगे चलकर तुम पर वो कहर ढाये जिन्हें पढ़कर आज आत्मा भी काँप उठती है।

बलपूर्वक और छल द्वारा धर्मान्तरण किये। किन्तु १२०० वर्षों में क्या तुम्हारे विद्वानों ने कभी भी इन धर्मों का गहन अध्ययन कर उनके इरादों को समझा? फलस्वरूप तुम्हारी संख्या कम होती गई। उनकी बढ़ती गई। तुम्हारा धर्म हो गया जैसे भी हो पैसा तथा क्षणिक सत्ता प्राप्त करना और सत्ता में बने रहना। फलस्वरूप पैसा तुमने पर्याप्त मात्रा में कमाया भी। सत्ता में भी तुम बने रहे किन्तु किसी संस्कृति को केवल पैसा नहीं बचा

सकता। सत्ता भी नहीं बचा सकती। यह तो साधन मात्र हैं। उसको बचाने के लिये ज्ञान, त्याग, लगन, तप एवम् बलिदान की आवश्यकता होती है।

इन गुणों का तुम्हारी जाति में नितान्त अभाव हो गया। त्याग तो तुम क्या करते, तुम लोगों ने अपनी उन सार्वजनिक संस्थाओं को भी लूट-लूट कर खोखला कर दिया जिनको जाति के भक्तों ने अपने खून-पसीने की कमाई का दान दे देकर खड़ा किया था। ऐसे लोभी स्वार्थी अज्ञानी लोग तपस्या और बलिदान नहीं किया करते।

नत मस्तक हो और हाथ जोड़कर वह हिन्दू भगवान से बोला-

प्रभो! समाज में अच्छे बुरे लोग सर्वत्र ही होते हैं। भूल मनुष्य से ही होती है। आपने सब सत्य ही कहा है किन्तु फिर भी मेरे समाज में दानी और परोपकारी मनुष्यों की, तपस्वी साधकों की कमी नहीं थी। दानी महानुभावों ने सहस्रों आश्रम खोले। एक-एक आश्रम में सैकड़ों साधक और परिव्राजक भोजन पाते थे। दिन-रात प्रवचन और पाठ होते थे।

भगवान उसे बीच में ही रोक कर बोले-

हाँ! मैंने तुम्हारे वह आश्रम देखे हैं वहाँ जो कुछ होता है वह मुझ से छिपा नहीं है। वह आश्रम कहाँ है? तुम उन्हें आश्रम कहते हो? तुम ही बताओ विलास की क्या कमी है वहाँ? जो सैकड़ों लोग नित्य प्रति मुफ्त भोजन पाते हैं उनमें गिनती के दो-चार भी तो साधक नहीं हैं। अधिकांश निठल्ले लोग हैं जिन्हें बिना परिश्रम भोजन पाने की आदत पड़ गई है। वह समाज के लिए परजीवी बन गये हैं। शेष जो श्रद्धावान लोग वहाँ आते हैं उनमें से कुछ

तो वर्ष भर सांसारिक कार्यों में लिप्त रहकर वहाँ पर थोड़ी शाँति की खोज में आते हैं। उनके लिये यह एक छुट्टी मनाने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

अधिकांश आश्रमों में उनकी जमीन जायदाद के मुकदमें चल रहे हैं। अध्यात्म, स्वाध्याय और समाज सेवा से यह आश्रम और उनके मठाधीश कोसों दूर हैं।

तुम्हारे साधु संतों की इस बुरी दशा को देखकर मैंने तुम्हें एक अंतिम अवसर और दिया। अपने तेजस्वी, तपस्वी पुत्र दयानन्द को भेजा। उसने वेदों का उद्धार किया। उन सभी तत्वों का अध्ययन किया जो तुम्हारे समाज को पतन की ओर ले जा रहे थे।

उनके विरूद्ध उसने युद्ध की घोषणा कर दी। किन्तु उसे तुम्हारी ही जाति के एक मनुष्य द्वारा विष दे दिया गया। उसके निधन के ५० वर्ष पश्चात ही उसका संगठन स्वार्थी लोगों द्वारा विघटित होने लगा। फलतः सत्ता और धन के लोभी बलशाली हो गये। ये स्वार्थी लोग उसके बताये हुए अपने मुख्य ध्येय को भूलकर वह दूषित राजनीति में उन्हीं तत्वों की कृपा जोहने लगे जिनके विरूद्ध उसने तुम्हें सावधान किया था।

अंग्रेजों के आने से पहले भारत में जनगणना की कोई पद्धति न थी, सन् १८६१ ई० में पहली जनगणना हुई उस जनगणना में हिन्दू भारत में ७५.१ प्रतिशत थे। वर्ष १९४१ के आते-आते अर्थात् ८० वर्ष में भारत में हिन्दू मात्र ६९.५ प्रतिशत रह गये। इसी समय में मुसलमान १९.९७ प्रतिशत से बढ़कर २४.२८ प्रतिशत हो गये। इसी प्रकार की बढ़ोत्तरी ईसाइयों में भी हुई।

फिर सन् १९४७ ई० में भारत का बँटवारा जो हिन्दू भारत

एवम् मुस्लिम भारत के रूप में हुआ। जिन नदियों के तट पर बैठकर तुम्हारे ऋषियों ने वेदों की ऋचायें लिखीं थीं और जिस तक्षशिला में तुम्हारे महान विद्वानों का निर्माण हुआ था, महर्षि पाणिनी की जन्मस्थली, वह सब मुस्लिम प्रांत बन गये। ९८ प्रतिशत मुसलमानों ने पाकिस्तान के पक्ष में मत देकर यह सिद्ध कर दिया था कि वह तुम्हारे साथ सह-नागरिक बनकर नहीं रह सकते।

तुम्हारी जाति जिनको शूद्र कहती थी, उन्हीं शूद्रों में से मेरे एक मनस्वी और तेजस्वी पुत्र अम्बेडकर ने तुम्हारे अदूरदर्शी और भ्रमित नेताओं को बार-बार चेताया कि मजहब के नाम पर ९८ प्रतिशत मुसलमानों द्वारा पाकिस्तान की माँग उठाने के पश्चात् मुसलमानों का हिन्दू भारत में बने रहने का कोई औचित्य नहीं है।

यदि वह भारत में रहे तो विभाजन से पूर्व की समस्यायें ज्यों की त्यों बनी रहेंगी। किन्तु तुम्हारे पद-लोलुप, दंभी और अदूरदर्शी नेताओं ने उसकी एक न मानी। उन्होंने पाकिस्तान गये हुये मुसलमानों से लौट* आने की अनुनय विनय की।

फलस्वरूप हिन्दू भारत में वही मुस्लिम समस्यायें फिर खड़ी हो गई जो विभाजन के पहले से मौजूद थीं। अपने ही बनाये स्वप्नों में खोये तुम्हारे नेता टूटे हुये कांच के टुकड़ों को गोंद लगा-लगा कर जोड़ने के प्रयास करते रहे।

उन प्रयासों की असफलता का दोष वह कभी कांच की

* मेरे द्वारा लिखित पुस्तक 'गांधी और नेहरू की भयंकर भूलों का परिणाम' पढ़ें।

- लाजपतराय अग्रवाल

(वैदिक मिशनरी)

कठोरता पर और कभी गोंद में चिपक की असफलता पर लगा कर रुदन करते रहे।

१२०० वर्ष के अनुभव से वह कांच के कभी न जुड़ने वाले स्वभाव को क्यों नहीं समझ पाये? ऐसे मूर्ख समाज को तो नष्ट होना ही था।

"हिन्दू भारत में हिन्दू का प्रतिशत सन् १९५१ ई० में था ८४.७८ प्रतिशत जो सन् १९७१ ई० में अर्थात् केवल बीस वर्ष बाद, वह रह गया ८२.७२ प्रतिशत।"

यह सीधा साधा गणित तुम्हारे किसी नेता की समझ में क्यों नहीं आया कि बूंद-बूंद घटने पर समुद्र भी सूख सकता है। तुम अपने ही देश में एक प्रतिशत प्रति दस वर्ष की गति से कम होते जा रहे थे। और मुसलमान ईसाई लगभग इसी गति से बढ़ते जा रहे थे।

संख्या की इस दौड़ में तुम उनसे दो प्रतिशत प्रति दस वर्ष पिछड़ते जा रहे थे। इसी प्रकार ईसाईयों से भी। किन्तु तुम्हारी जाति का यह संख्या ह्रास तो केवल जन्म दर के कारण था। विधर्मी पास के विदेशों से चोरी छिपे तुम्हारी सीमाओं में घुसे चले आ रहे थे।

नागालैंड में मुस्लिम सन् १९६१-७१ के बीच २३.२ प्रतिशत और सन् १९७१-८१ के बीच २९.८ प्रतिशत बढ़े। जबकि हिन्दू लगभग ७.५ प्रतिशत बढ़े। सिक्किम में मुस्लिम सन् १९७१-८१ में ८६.७ प्रतिशत अरूणाचल में ५०.२, मिजोरम में सन् १९६१-७१ में ८०.५ प्रतिशत बढ़े। तुम्हारे शासक और समाज इस चारों ओर से घिरती चली आ रही टिड्डी दल जैसी आपत्ति से कैसे आँखें मूंदे बैठे रहे?

वह हिन्दू भगवान की इन कटु बातों को सुनकर तिलमिला उठा। उसने हाथ उठा कर कहा-

"प्रभो! क्षमा करें। क्या "सर्व धर्म समभाव" और "सत्यमेव जयते" जैसे सिद्धान्तों की संसार में घोषणा करने और उन पर आचरण करने वाले हिन्दू समाज को नष्ट हो जाना चाहिये था? कौन सा दूसरा समाज है जो इन सिद्धान्तों पर आचरण करना तो दूर, इनको मान्यता भी देता हो।"

भगवान अपने उस अबोध बालक पर करुणामयी दृष्टि डाल कर बोले-

हे वत्स! तुम्हारे समाज जैसा भ्रमित समाज संसार में आज तक अन्य कोई दूसरा न कभी रहा न कभी रहेगा। तुम्हारे उपरोक्त दोनों ही सिद्धान्त तुम्हारी मूर्खता के परिचायक हैं।

धर्मों में समानता कम है विरोध अधिक। क्या तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी धर्म दूसरे धर्म को आदर अथवा सम्मान योग्य घोषित करता है। कर भी नहीं सकता। अन्यथा उसके अस्तित्व की आवश्यकता ही क्या?

ईसाई, इस्लाम आदि मध्य एशिया में उत्पन्न मज़हब हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों के नितांत विपरीत सिद्धांत पर बल देते हैं। वह जिन धर्मों को कुफ्र और मूर्खता की उपज समझते हैं उनको आदर कैसा? समान आदर देने की बात तो असम्भव है।

अब सुनो 'सत्यमेव जयते' का रहस्य। तुमने इसका अर्थ समझा कि सत्य पक्ष की सदैव विजय होती है, असत्य पक्ष की नहीं। इस कारण अपने पक्ष को सत्य मानकर तुम सदैव आश्वस्त होते रहे कि विजय तुम्हारी ही होगी।

किन्तु इस उपनिषद वाक्य का अर्थ यह नहीं है कि सत्य पक्ष

की सदैव विजय होती है। इसका अर्थ यह है कि सत्य सिद्धांत की सदैव विजय होती है, असत्य सिद्धांत की नहीं।

जबकि सत्य सिद्धान्त यह है कि-

- बलवान की विजय होती है निर्बल की नहीं।
- चातुर्य की विजय होती है मूर्खता की नहीं।
- शौर्य की विजय होती है कायरता की नहीं।
- संगठित समाज की विजय होती है असंगठित की नहीं।
- अनुशासित शासन की विजय होती है अनुशासनहीन की नहीं।

और जो विजयी होता है उसी का पक्ष सत्य मान लिया जाता है। इस कसौटी पर अपनी असफलताओं को परखोगे तो तुम्हें इस सिद्धान्त का वास्तविक अर्थ समझ में आ जायेगा।

क्या तुमने कभी सोचा कि यदि सत्य पक्ष की ही सदैव विजय होती तो तुम यवनों और ईसाइयों से निरन्तर क्यों हारते रहे? क्या इससे यह सिद्ध हो गया कि तुम्हारा पक्ष झूठा था और उनका सत्य?

नहीं पुत्र नहीं! इस उपनिषद-वाक्य का अर्थ यह नहीं है कि 'सत्य पक्ष की सदैव विजय होती है असत्य पक्ष की कभी नहीं।' इसका अर्थ यह है कि-

'सत्य सिद्धांत की सदैव विजय होती है असत्य सिद्धान्त की नहीं।'

मैंने कहा था कि जो स्वयं अपनी रक्षा न कर सके उनकी रक्षा मैं भी नहीं कर सकता। दुर्बल का मर जाना ही कल्याणकारी होता है, 'दैवो दुर्बल घातकः' अर्थात् ''दैव भी दुर्बल को ही मारता है'' ऐसा मेरा मत है।

यदि तुम्हें अपने समाज को जीवित रखने की आकांक्षा होती तो तुमने उसके निरन्तर ह्रास को रोकने का कोई उपाय तत्काल सोचा और किया होता। तुमने सांपों, चीतों, बाघों तथा गैंडों इत्यादि पशुओं की सुरक्षा के तो कारगर उपाय किये जिससे उनकी प्रजाति लुप्त न हो जाये किन्तु अपने समाज, संस्कृति तथा धर्म को लुप्त होते हुये देखकर उसकी सुरक्षा का क्या कोई उपाय किया?

तुम और तुम्हारे द्वारा चुने हुये सत्ता प्राप्त शासक दशाब्दियों तक इस ह्रास को मूक बने देखते रहे। दूसरी ओर मुसलमानों व ईसाइयों ने वह सभी सम्भव उपाय किये जिनसे इस दौड़ में उनकी तुम्हें पछाड़ने की गति तीव्र होती गई। इस आत्मघाती लापरवाही का जिम्मेदार तुम्हारा समाज स्वयं था।

तुम्हारे समाज ने बार-बार उन्हीं लोगों को सत्ता सौंपी जिन्हें तुम्हारे हितों की कोई चिन्ता नहीं थी। जो कहने को हिन्दू तो थे किन्तु विजातिय संस्कृति एवम् धर्मों के प्रशंसक थे। उन्हें तो हिन्दू संस्कृति एवम् हिन्दू ज्ञान छू भी नहीं गया था।

कैसी अद्भुत बात है कि ८५ प्रतिशत जनसंख्या के बल पर चुने हुये प्रतिनिधि उसी समाज के साथ विश्वासघात करने की हिम्मत करें। ऐसा व्यवहार केवल एक मृत प्रायः समाज के साथ ही किया जा सकता है।

तुम्हारे तथाकथित विद्वान भी धन और सम्मान की लालसा से इतिहास को तोड़ने मरोड़ने लगे। उन्हें अपनी जाति में ही सब दोष दिखाई देते थे।

विजातिय संस्कृति एवम् धर्म की झूठी प्रशंसा ही मानो उनका कर्तव्य बन गया था। उनकी खोटी हिन्दू-घातक गतिविधियों को

उजागर करने का साहस तुम में से किसी में न था।

हिन्दू बाहुल्य के कारण धर्म के नाम पर बने तुम्हारे देश में मुसलमान समस्यायें पैदा करते रहे। पड़ौसी देश समस्यायें उत्पन्न करते रहे। न तुम्हारे नेताओं में और न तुम्हारे बुद्धिजीवियों में यह कहने का साहस हुआ कि यह समस्यायें उनका इस्लामी दर्शन उत्पन्न कर रहा है।

वह उन समस्याओं को सदैव राजनीतिक कह कर अपने को धोखा देते रहे और समाज को भी भ्रमित करते रहे। क्या उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि इस्लाम का एक मात्र ध्येय विश्व पर शरीयः शासन और इस्लाम की स्थापना करना है।

जब तक यह ध्येय प्राप्त नहीं हो जाते हैं इस्लाम चुप नहीं बैठ सकता। ''जिस समाज के विद्वतजन भ्रष्ट हो जाते हैं वह समाज नष्ट हो जाता है।'' क्योंकि शिक्षा द्वारा भावी पीढ़ी की मनोवृत्ति बनाने वाले वह ही हैं।

जिस जाति को अपने हित चिंतकों और अहित चिंतकों की पहचान न हो, जिसे अपने नितप्रति क्षीण होते हुए अस्तित्व की चिंता ही न हो वह कितने दिन जीवित रह सकता है?

तुम में पूज्य-अपूज्य का भेद न रहा, मित्र और शत्रु का भेद न रहा, धर्म-अधर्म का भेद न रहा। ज्ञान-अज्ञान का भेद न रहा। शिक्षा-कुशिक्षा का भेद न रहा।

क्या अब तुम्हारी समझ में आया कि अपनी बर्बादी के जिम्मेदार तुम स्वयं हो। मैंने तुम्हें बचाने के सहस्रों उपाय किये। बताओ वत्स! मैं और क्या करता? इसमें दोष तुम्हारी जाति का है या मेरा?

भारत के संवेदनशील क्षेत्रों में मुसलमानों की जनसंख्या का बढ़ता प्रतिशत* (तालिका)

स्थान	मुस्लिम संख्या के विस्तार का प्रतिशत		हिन्दू संख्या के विस्तार का प्रतिशत	
	१९६१-७१	१९७१-८१	१९६१-७१	१९७१-८१
नागालैंड	२३२.८८	२१८.०४	७०.२३	८८.४८
पंजाब	२८.५२	४६.१०	८.१३	२१.१०
राजस्थान	३५.२७	४०.१०	२७.३	३२.५१
सिक्किम	पता नहीं	८६७.४६	पता नहीं	७१.६४
चण्डीगढ़	१५३.३८	१४५.०३	१०९.२६	८४.३४
दिल्ली	६१.२	८३.२	८२.५	५२.५
दादरा नगर हवेली	६५.१८	१६१.१	२५.६३	३१.३१
गोवा, दमन दीप,	१२०.८१	५०.२६	४३.२	३०.१०
मिजोरम	८०४.८	१७.१०	५४.०८	६६.०२

* अगर हम दो हमारा एक तथा हम दो हमारे पच्चीस वाला सिद्धान्त मौजूद रहा तो भविष्य में अति शीघ्र क्या चमत्कार होने वाला है? इसका अहसास आज प्रत्येक विवश हिन्दू कर रहा है।

– लाजपतराय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)

अंतिम हिन्दू (मूल लेख बंगला में)

श्री शिव प्रसाद राय
अंग्रेजी अनुवादक, ए. घोष
हिंदी अनुवादक- पुरुषोत्तम योग

संकट का पूर्वाभास

जब मैं छोटा बच्चा था, मैंने एक पुस्तक पढ़ी थी। पुस्तक का नाम था 'जो समझ में न आ सके, उसमें ऐसी-ऐसी घटनाओं का जिक्र था जो आदमी के 'सामान्य ज्ञान' से सिद्ध न होती हों। मैं अब बालक नहीं रहा, किन्तु अपने चारों ओर होती हुई घटनाओं को देखकर मुझे उस पुस्तक की याद आती है।

ऐसा लगता है कि हमारे सारे समाज की विचारधारा में मूलभूत परिवर्तन आ गया है। हम अपने स्वप्नों की दुनिया में रह रहे हैं। एक ऐसी दुनिया जिसका वास्तविकता से कोई सरोकार नहीं है।

मुझे ऐसा लगता है कि यदि तथ्यों की ठोस बुनियाद पर अपने पैर जमाने में ज़रा भी असावधानी की गई तो हम निश्चय ही सर्वनाश को प्राप्त हो जायेंगे। देश की सम्पूर्ण आर्थिक दुर्व्यवस्था और उससे होने वाली चरित्रहीनता की पराकाष्ठा का देश में प्रसार देश के बँटवारे के सिर मढ़ा जाता है।

स्पष्टतया हिन्दुस्तान का बँटवारा हिन्दू नेताओं की

अत्यधिक मूर्खता के कारण हुआ। अट्ठानवें प्रतिशत मुसलमानों ने निश्चयपूर्वक यह कहा था कि-

'हिन्दू और मुस्लिम दो भिन्न-भिन्न राष्ट्र हैं'।

क्योंकि मुसलमानों के लिये हिन्दुओं के साथ रहकर अपने धर्म और संस्कृति का पालन करना असंभव है। इसलिये मुसलमानों को अलग देश चाहिये जिसका नाम "पाकिस्तान" होगा अर्थात् पाक लोगों की भूमि।

जब पूरा मुस्लिम नेतृत्व हिन्दुस्तान के दो टुकड़े करने के लिये योजना बनाने में निरन्तर प्रयत्नशील था उस समय हमारे हिन्दू नेता क्या कर रहे थे?

हिन्दू नेता हिन्दुओं को यह समझाते हुए दौड़ रहे थे कि 'हिन्दू और मुसलमानों में कोई भेद नहीं है। दोनों ही भारतीय राष्ट्र के अंग हैं। मुहम्मद अली जिन्नाह और मुस्लिम लीग जिस पाकिस्तान की माँग करते हैं वह बेबुनियाद है।

उस समय गांधी ने कहा था-

"हिन्दुस्तान का बँटवारा मेरी लाश पर ही हो सकता है।"

पंडित नेहरु ने कहा था-

"पाकिस्तान एक वाहियात सपना है। हम तो ऐसा सपने में भी नहीं सोच सकते।"

राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी मोटी पुस्तक- 'इन्डिया डिवाइडेड' में लिखा था-

"पाकिस्तान असम्भव है"

इन सबकी मान्यता थी कि अधिकतर मुसलमान देशभक्त थे और वह सब काँग्रेस पार्टी में थे।

थोड़े से साम्प्रदायिक और अदूरदर्शी लोग हैं जो पाकिस्तान की बात करते हैं और खतरे की अफवाहें फैलाते हैं।

यह कोरा झूठ करोड़ों हिन्दुओं के कानों में मंत्रवत् इन अदूरदर्शी नेताओं के लाखों अनुयायियों द्वारा फूँका जाता रहा। किन्तु वास्तव में हुआ क्या?

पाकिस्तान बना, अनगिनत हिन्दू मारे गये, हिन्दुओं के खून और आँसुओं के दरिया बहाए गये। स्त्रियों के सतीत्व लूटे गये।

''हिन्दू और मुसलमान दो अलग-अलग कौमें हैं'' इस तथ्य को सबको मानना पड़ा और अन्त में हिन्दुस्तान के टुकड़े हो गए।

अब इन राष्ट्रीय नेताओं को हम किस नाम से पुकारेंगे। हम उनको कपटी कहें या ढोंगी, या झूठे, या अदूरदर्शी, या जड़ बुद्धि या लोभी?

उनके कार्यकलापों को देखते हुए यह सभी विशेषण उन पर ठीक बैठते हैं। किन्तु नहीं, मैं उन्हें इन नामों से नहीं पुकारुंगा। वह अब हमारे बीच में नहीं हैं। मेरे मन में उनके लिये अब भी कुछ आदर है।

दैनिक और भौतिक प्रेरणा से ही शायद उन्होंने कुछ ऐसा कहा होगा। किन्तु यह तो मानना ही पड़ेगा कि वह सामान्य व्यवहार और बुद्धि से हीन थे। अन्यथा उनके इन कार्यकलापों को किसी भी प्रकार तर्क-संगत नहीं कहा जा सकता।

फाँसी पर लटके हिन्दू, सीने पर गोलियां खाई हिन्दुओं ने और हुआ क्या?

स्वतंत्रता के युद्ध में दैवी प्रेरणा वश हिन्दुओं ने अपने जीवन की बलि चढ़ाई जबकि मुसलमानों ने मुस्लिम राज्य की स्थापना की क्योंकि वहाँ मुसलमान बहुसंख्या में थे।

फाँसी पर लटकने वालों की संख्या पूर्वी बंगाल में ही सर्वाधिक थी। उन शहीदों की नामावली में एक भी मुस्लिम नाम नहीं है जिसने इस देश के निर्माण अथवा स्वतंत्रता के लिये जीवन दिया हो। यह केवल पूर्वी - बंगला देश के लिये ही नहीं, बल्कि पूरे बंगाल के लिये भी सत्य था।

मुसलमानों को उनके मन की मुराद पाकिस्तान और बंगला देश के रूप में प्राप्त हुई जिसके लिये उन्होंने अंग्रेजों के साथ मिलकर हिन्दुस्तान के साथ विश्वास-घात किया था। और अब सोचिये तो सही! पूर्वी बंगाल का हिन्दू फाँसी पर लटका, सीने पर गोलियां हिन्दू ने खाई, और उसका इनाम उसको क्या मिला? अपनी मातृभूमि को छोड़कर शरणार्थी बन भारत की ओर भागना पड़ा।

श्यामाप्रसाद मुखर्जी को छोड़कर एक भी हिन्दू नेता ऐसा नहीं था जिसमें थोड़ी सी भी आत्मसम्मान की भावना रही हो और जिसको इन घटनाओं ने आन्दोलित किया हो। और इन नेताओं ने श्यामाप्रसाद मुखर्जी को प्रतिक्रियावादी और साम्प्रदायिक

जैसे नामों से सम्बोधित किया।

देश के बँटवारे के समय जैसी परिस्थियाँ फिर पैदा हो रही हैं। ऐसा लगता है कि दूसरा बँटवारा* फिर होगा। भारत के अधिकतर मुसलमान, कुछ लोगों को छोड़कर, इस ध्येय को मन में लेकर चल रहे हैं और उनकी इस योजना में सहयोग और शक्ति मिल रही है विदेशी धन से।

वह लोग जो इन शरारतपूर्ण कार्यवाहियों को सही रूप में देखते हैं उनको साम्प्रदायिक कहा जाता है। दैवी प्रेरणा के वशीभूत हमारे हिन्दू नेता जो आधा भारत तो पहले ही गँवा चुके हैं अभी भी 'जड़ बुद्धि' बने हुये हैं।

हिन्दुस्तान का बँटवारा दो राज्यों के सिद्धान्तों पर हुआ था। किन्तु इन हिन्दू राजनीतिक नेताओं के सिर पर अभी भी मिश्रित संस्कृति और एक राष्ट्र का भूत सवार है।

पाकिस्तान में हिन्दुओं का सफाया कर दिया गया, बंगला देश में यह प्रक्रिया जारी है। किन्तु हमारे हिन्दू नेता जनसंख्या की अदला बदली जैसे व्यवहारिक सिद्धान्त को आज भी मानने को तैयार नहीं हैं। इस प्रकार वही मुसलमान जिन्होंने पाकिस्तान यह कह कर बनवाया था कि हिन्दुओं के बीच उनका इस्लाम सुरक्षित नहीं है सर्वरूपेण भारत में ही रह गये, उन्होंने कुछ नहीं खोया।

---

* **'क्या भारत का एक विभाजन और होगा?'** नामक पुस्तक अवश्य पढ़ें, जो मेरे द्वारा ही लिखी गई है, प्रस्तुत विषय पर पर्याप्त प्रकाश डालती है।

– **लाजपतराय अग्रवाल**

(वैदिक मिशनरी)

पाकिस्तान और बंगला देश तो उनकी शुद्ध जागीरें बन गईं। उनमें हिन्दू को बोलने का भी अधिकार नहीं रहा। और यह विभाजित भारत फिर भी सम्मिलित खाते में है। यहाँ से जितना लूट सको लूटो। हिन्दुस्तानी मुसलमानों का कुछ इसी प्रकार का दृष्टिकोण है।

जब हिन्दुस्तान का बंटवारा हुआ तो पाकिस्तान को इस्लामी राज्य घोषित किया गया। किन्तु भारत हिन्दू राष्ट्र नहीं बना। यह बात प्रायः सभी जानते हैं कि हिन्दू राष्ट्र में किसी भी दूसरे धर्म पर संकट नहीं आया।

नेपाल का ही उदाहरण ले लें जो कि हिन्दू राज्य* है। उस देश को छोड़कर एक भी मुसलमान को वहां से भागना नहीं पड़ा है।

किन्तु पाकिस्तान और बंगला देश में हिन्दू 'जिम्मी' और 'काफिर' कहे जाते हैं। बलि के बकरे की तरह वह लाचार हैं। उन्हें चाहे जब सताओ और जब चाहे ठोकर मारकर उनको उनके घरों से बाहर कर दो।

भारत में रहने वाले एक भी मुसलमान को इन लाचार लोगों पर होने वाले जुल्म व सितम से शर्म महसूस नहीं होती। यहाँ तक कि वह मौखिक रूप से भी इसका विरोध करने का कष्ट नहीं उठाते।

अभी कुछ दिन हुए २०००० चकमा हिन्दुओं को चटगाँव

---

* नेपाल भी अब हिन्दू राज्य नहीं रहा।

– लाजपतराय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

से खदेड़ा गया। जाहिर तौर पर अब बंगला देश उनकी वापसी पर सहमति का प्रचार कर रहा है। किन्तु लौटने पर उनके साथ जैसा व्यवहार किया जायेगा उसके डर से वह वहां पर वापस जाना नहीं चाहते।

पाकिस्तान हितैषी ९७प्रतिशत मुसलमान भारत में ही रह गए। उनके धर्म-संस्कृति पर कोई आँच नहीं आई। मुजीब के कत्ल होने पर उन्होंने खुशियाँ मनाई, और जब भुट्टो को फांसी दी गयी तो उन्होंने हिन्दुस्तान के सिनेमा हाल और बसें जलाईं।

अगर पाकिस्तान की टीम क्रिकेट या हाकी में जीत जाये तो अपने रेडियों को फूल माला पहनाते हैं।

कलकत्ते के मुस्लिम बाहुल्य राजा बाजार और पार्क सरकस इलाकों में जलूस निकाल कर जश्न मनाते हैं। अल्लाह-ओ-अकबर के नारे लगाते हैं। इन मुसलमानों के आचरण से यह एकदम स्पष्ट दिखाई देता है कि इन लोगों का प्रेम व निष्ठा इस देश में न होकर कहीं और ही है।

लखनऊ के मुसलमान ईरान और ईराक के पक्षधर हैं। उनके घरों में खुमैनी या सद्दाम हुसैन की तस्वीरें टँगी हैं।

यदि कोई यह पूछ बैठे कि भारत के भक्त मुस्लिम कौन से हैं तो तुरन्त हिन्दू ही इकट्ठा होकर कहने लगेंगे कि इस प्रकार के प्रश्न करना घोर साम्प्रदायिकता है। वह ऐसा दोषारोपण क्यों करते हैं? केवल इसलिए कि उनमें दैवी प्रेरणा तो भले ही हो किन्तु सामान्य बुद्धि किंचित भी नहीं है।

जनतंत्र, समाजवाद और धर्म निरपेक्षता

लगभग सारी ही राजनीतिक पार्टियाँ इन तीन बिन्दुओं पर

एक मत हैं- समाजवाद, जनतंत्र और धर्म निरपेक्षता। यह तीनों ही लक्ष्य इस तथ्य पर आधारित हैं कि इस देश में हिन्दुओं की जनसंख्या अधिक है। जहाँ-जहाँ भी इस देश में या संसार के अन्य देशों में गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यक हो गया है वहाँ-वहाँ यह उद्‌देश्य समाप्त हो गए हैं। पाकिस्तान और बंगला देश में इन उद्‌देश्यों की अब कोई बात नहीं करता। काश्मीर में जहाँ मुस्लिम बाहुल्य है, सब प्रकार के साधन जुटाए जाने के बावजूद जैसे दो रूपये किलो चावल, तथा एम.ए. तक निःशुल्क शिक्षा इत्यादि-इत्यादि समाजवाद लाने में कोई भी सफलता नहीं मिली है, चाहे वह समाजवाद मार्क्स का हो या गाँधी का हो या इन्दिरा जी का हो।

काश्मीर विधान सभा ने उन मुसलमानों को जो ३५ वर्षों से भारत छोड़कर पाकिस्तान में रह रहे हैं काश्मीर लौटने पर उनकी सम्पत्ति वापस करने का बिल पास किया है। किन्तु बंगला देश में हिन्दुओं की सम्पत्ति शत्रु सम्पत्ति मानी जाती है। इन्दिरा गाँधी का जादू देश में और कहीं भले ही चलता हो वह काश्मीर में नाकारा साबित हो जाता है।

किसी भी राजनीतिक पार्टी के नेता क्यों न हों, काश्मीर के मामलों में उनकी बोलती बन्द हो जाती है। शेख अब्दुल्ला जैसा आदमी जो देशद्रोह के अपराध में वर्षों जेल में बन्द रहा हो, जिसके हाथ श्यामाप्रसाद मुखर्जी के खून से रंगे हुए बताए जाते हों, वह काश्मीर के मुख्यमंत्री बनाए गए। और वह इसलिए बनाए गये कि वहाँ हिन्दू अल्पसंख्यक थे।

अभी पिछले साल ही लगभग २०० मन्दिर काश्मीर में नष्ट

किए गए और गिराए* गए। वहाँ गीता जैसी धार्मिक और सत्यार्थ प्रकाश जैसी सांस्कृतिक पुस्तकें एक प्रकार से प्रतिबन्धित हैं।

भारत के अधिकांश हिन्दू नेताओं को इन बातों की पूरी जानकारी है किन्तु वह सब तो दैवी प्रेरणा और ब्रह्मज्ञान से इतने ओतप्रोत हैं कि एक सामान्य बुद्धि वाले मनुष्य की तरह वह इन सबका विरोध भी व्यक्त नहीं करते।

हिन्दू जनसंख्या का ह्रास

संयुक्त राष्ट्र की जनगणना सांख्यिकी के अनुसार भारतीय मुसलमानों की अनियंत्रित जन्मदर और बाहर के देशों से बड़ी संख्या में घुसपैठ के कारण सन् २०२५ ई. से पहले ही भारत मुस्लिम बाहुल्य देश बन जायेगा। इसके अलावा अरब देशों से आने वाले करोड़ों रुपये से हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन भी किया जा रहा है यह तथ्य भारत सरकार के गृह मन्त्रालय द्वारा स्वीकार किया गया है।

हजारों साल पुराना ''मीनाक्षी पुरम'' मात्र ८०० हिन्दुओं के मुसलमान होते ही 'रहमतनगर' बना दिया गया। क्या भारत में

---

* हमारे सभी स्कूलों-कॉलिजों और मन्दिरों को तोड़कर उन्हें मदरसों में बदल दिया गया, जिनमें आज भारतीय सभ्यता और संस्कृति को नष्ट करने वाले देशद्रोही (आतंकवादी) युवक तैयार किये जा रहे हैं। मैं स्वयं वहां का प्रत्यक्ष दर्शी हूँ, सन् २०१० ई० में, मुझे कश्मीर यूनिवर्सिटी के आमन्त्रण पर श्रीनगर जाने का अवसर मिला था। जिसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। मैं सर्वप्रथम सन् १९७० ई० में श्रीनगर (कश्मीर) गया था, उसके बाद भी अनेकों बार गया, परन्तु सन् १९९५ ई० के बाद जब सन् २०१० ई० में गया तो वहां के परिवर्तन को देखकर मैं सोच रहा था कि कहीं मैं पाकिस्तान में तो नहीं आ गया।

– लाजपतराय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)

हिन्दू बहुमत न रहने पर भी भारत बना रह सकेगा? यह साधारण सी सामान्य ज्ञान की बात इन ''दैवीप्रेरणा'' से अभिभूत हमारे धार्मिक और राजनीतिक नेताओं, मठाधीशों और साधु-सन्यासियों की बुद्धि में क्यों नहीं समाती?

अभी कुछ समय हुआ कि बैलूर- रामकृष्ण मिशन में एक बड़ी सभा हुई। उसमें तीन दिनों तक **''सर्वधर्म सम भाव''** विषय पर विचार विनिमय होता रहा और यह कि इस उद्देश्य की प्राप्ति कैसे की जावे?

ऐसा लगता है कि सारे मज़हबों को प्रेम पूर्वक मिलाने की जिम्मेदारी हिन्दुओं की ही है। शिलांग के इस समाचार का जिसमें कहा गया है कि ईसाइयों ने रामकृष्ण मिशन के सन्यासियों की जमकर पिटाई की, इस सभा में कोई जिक्र नहीं हुआ।

चेरापूँजी में ईसाइयों ने वहाँ के रामकृष्ण मिशन की पानी की लाइन काट दी, सब प्रकार से प्रताड़ित किया। देश के दूसरे हिस्सों में भी ईसाइयों द्वारा हिन्दुओं पर किए जा रहे जुल्मों पर विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं समझी गई।

ऐसा लगता है कि दूसरे मतावलम्बियों की ठोकरें खाना और साथ ही साथ **''सर्व धर्म सम भाव''** की बातें करते रहना ही बहुत सी हिन्दू धर्म संस्थाओं का एकमात्र काम रह गया है।

'जगत जननी' की करतूत

बर्दवान विश्वविद्यालय के कुलपति ने बर्दवान नगर से एक लाख रुपया इकट्ठा किया और उस धन को मदर टेरेसा को अर्पण कर दिया। बहुत से हिन्दू मिनिस्टरों और गणमान्य हिन्दू नागरिकों ने भी रुपया इकट्ठा करने में जोरदार सहयोग दिया।

टेरेसा के लिये **"जगत-जननी"** जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया और एक विशाल आयोजन इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए किया गया।

अब इस रुपये से यह **'जगत-जननी'** हज़ारों हिन्दुओं को ईसाई बनायेगी। निःसंदेह ईसाई राष्ट्रों ने टेरेसा को नोबिल-प्राइज़ इस कारण दिया कि उन्होंने भारत के ईसाई-करण में अद्‍भुत सफलता प्राप्त की है।

उत्तरी पूर्वी भारत में होने वाले अधिकांश संकट उन्हीं धर्म परिवर्तित ईसाइयों के कारण हैं। यही वह लोग हैं जिन्होंने त्रिपुरा में हजारों हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया।

इस "जगत-जननी" के पास उन कत्ल किये गए हिन्दुओं के प्रति शोकसूचक एक भी आंसू नहीं था। वह सिवाय ईसाइयों के किसी और की मदद या सेवा नहीं करतीं।

मुस्लिम बंगला देश ने टेरेसा को अपने देश में घुसने भी नहीं दिया, और इस हिन्दू समाज को देखो। यह उन गायों की तरह है जो अपनी पीठ पर कसाई द्वारा काटी गई दूसरी गायों का मांस आराम से जुगाली करती हुई ढोती जाती हैं।

इनमें सामान्य बुद्धि जैसी कोई भी तो चीज़ नहीं रह गई है। भले-बुरे, उपयुक्त अनुपयुक्त, शत्रु या मित्र की परख करने की शक्ति ही जैसे समाप्त हो गई है। उन्हें हिन्दू धर्म की पवित्रता और उसकी महत्ता का कोई ज्ञान ही नहीं है।

संसार में और कोई भी **"सर्व-धर्म-समभाव"** की बात नहीं करता। केवल हिन्दू को इसकी फिक्र है। हिन्दू यह क्यों नहीं समझता कि **"सर्व-धर्म-समभाव"** की बात शुरु करने से पहले

उसे एक ऐसा देश चाहिए जहाँ यह सिद्धांत सर्वोपरि हो। कैसे दुःख की बात है कि इतनी मामूली सी बात भी उसकी समझ में नहीं आती।

वास्तविकता से दूर, यह धार्मिक दिखावा, ढोंग, जाल-साज़ी और धोखाधड़ी का रूप लेता जा रहा है। एक लंबे अंतराल से चलने वाली आत्म-प्रवंचना ने हिन्दुओं को कायर बना दिया है, जिससे वह अपनी आत्मरक्षा के कतई अयोग्य हो गये हैं। और यही कारण है कि हम जहाँ भी देखते हैं हिन्दू को ही पिटते हुए, भागते हुए और धर्म परिवर्तन करते हुए देखते हैं।

यदि कोई समाज अपनी रक्षा करने में असहाय हो जाता है तो उसकी जीवित रहने की शक्ति ही समाप्त हो जाती है।

उस समाज का कोई आदर नहीं करता, उस पर रहम भले ही करें। किन्तु अब तो स्थिति यह हो गयी है कि हिन्दुओं पर कोई रहम भी नहीं करता।

हिन्दू समाज : खुला शिकारगाह

हिन्दू समाज इसलिए एक वृहद् खुला शिकारगाह बन गया है। सब शिकारी हिन्दुओं के पीछे पड़े हैं। समाज सेवा का जामा पहनकर और आर्थिक प्रलोभन दिखाकर हज़ारों शिकारी हिन्दुओं का शिकार करने उतर पड़े हैं। उनका मुख्य लक्ष्य है हिन्दू समाज का नाश! दिन प्रतिदिन इन शिकारियों की संख्या बढ़ती जाती है।

ईसाई और मुस्लिम देशों से इन शिकारियों को असंख्य वित्तीय सहायता मिलती है और कार्यकर्त्ता भी मिलते हैं।

इस प्रकार के घृणित कार्य करने का इनको साहस कैसे होता है? साहस होता है हिन्दू के चरित्र से। उन्हें कोई भय नहीं

लगता है। हिन्दू कमज़ोर हैं। वह बड़ी-बड़ी बातें करते हैं परन्तु उन्हें बड़ी आसानी से खरीदा जा सकता है। केवल इतना ही नहीं वह अपने को बड़ा उदारवादी और ज्ञानी भी समझते हैं। ऐसा आत्महत्या पर उतारु समाज और आपको कहाँ मिलेगा? इसलिए आखेट जारी है।

अरब देशों से रुपया भारत आ रहा है। ईसाई प्रचारक खुले आम केवल हिन्दुओं के ही मोहल्लों में घूम रहे हैं। दूसरी जगह जाने की उनकी हिम्मत ही नहीं है। अब समय आ गया है कि हमारे धर्म गुरु, राजनेता और साधारण नागरिक इस कटु सत्य का सामना करें।

योगी, साधु, वैष्णव भक्तों, तुम अपना ध्यान, कीर्तन, जप करो, अपने भक्तिभाव पूर्ण आँसुओं से इस देश को आप्लावित कर दो, किन्तु इन सबसे ऊपर एक बात याद रक्खो कि हम एक हिन्दू राष्ट्र हैं।

भगवान न करें यदि कभी यह हिन्दू शक्ति कमज़ोर हो गई, या हिन्दू अल्पसंख्यक हो गए तो न तुम ध्यान कर पाओगे, न जप, न कीर्तन।

राजनैतिक कार्यकर्ताओं को भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि तुम्हारे, बाद, चाहे मार्क्सवाद हो, चाहे गाँधीवाद, या कोई दूसरा वाद यह तभी तक हैं जब तक यह देश हिन्दुओं का देश है। इन मार्क्सवादियों, गाँधीवादियों इत्यादि को यह नहीं भूलना चाहिये, कि सब वाद पूर्वी बंगाल में केवल इसलिए समाप्त हो गए क्योंकि हिन्दुओं ने वहाँ अपना बहुमत खो दिया था।

प्रमोद दास गुप्ता, पश्चिमी बंगाल में बहुत दहाड़ते थे। किन्तु अपनी जन्म भूमि फरीदपुर में मार्कसिज्म का कोई प्रचार नहीं कर सके। प्रफुल्ल सेन स्वप्न में भी गाँधीवाद का विचार अपनी जन्म भूमि 'खुलना' में नहीं कर सके।

ठाकुर अनुकूल चन्द्र के शिष्य कहते फिरते हैं कि उनके गुरु अवतारी पुरुष हैं, और केवल भगवान के बाद दूसरे नम्बर पर हैं। उन्होंने अपने शिष्यों से बार-बार कहा कि सारे धर्म एक समान हैं। किन्तु पाकिस्तान बनने से ठीक पहले वह पबना में अपना मुख्य मठ छोड़कर देवधर भाग आये। उनकी दैवी बुद्धि ने चाहे कितनी ही ऊंची बातें कहीं हो किन्तु उनकी सामान्य बुद्धि ने कहा कि चलो 'हिन्दुओं के देश में भाग जाओ। वह हिन्दू बाहुल्य देश है। यहाँ पर तुम अपनी सारी ब्रह्मशक्ति लगाकर भी अपनी रक्षा नहीं कर सकोगे और गुरु अनुकूल चन्द्र वहां से भाग कर भारत आ गए।

यदि हिन्दू बहुमत में न रहा तो?

यदि हिन्दू अल्पसंख्यक हो जाते हैं तो ब्रह्म की पूजा और भक्ति कौन करेगा? यह साधारण सी बात इन तमाम गुरुओं और उनके मानने वालों की समझ में आना चाहिए।

इस बंग भूमि में एक और भी गुरु हैं। उनका नाम जन्म से 'ठाकुर बाल ब्रह्मचारी' है। उनका जन्म ढाका जिले के एक छोटे से गांव मेदनी मण्डल में हुआ था। उनकी सारी आध्यात्मिक शक्तियाँ बिल्कुल बेकार हो गयीं। वे भी अपनी जान बचाने के लिए, दौड़ पड़े। और कहाँ को, एक हिन्दू बाहुल्य देश की ओर।

स्पष्ट है ब्रह्मचारी की भी शक्तियां गायब हो जाती हैं जहाँ

से हिन्दू गायब हो जाते हैं या जहाँ वह अल्पसंख्यक हो जाते हैं। और यही हाल बाल ब्रह्मचारी का भी हुआ।

यह कोई आध्यात्मिक आडम्बर नहीं है और न यह विचार क्रोधवश प्रकट किये गए हैं। सीधे सादे यही तथ्य हैं। किन्तु दुर्भाग्यवश इन धर्म-गुरुओं ने उन खतरों से कुछ नहीं सीखा जिनसे यह बाल-बाल बचे।

उपरोक्त घटना के बाद उनके शिष्यों ने एक ग्रामोफोन रिकार्ड बनाया जिसकी शुरुआत अल्लाहो अकबर की अज़ान से होती है और फिर कुछ कथा और हिन्दू शास्त्रों के पाठ।

कथा में कहा जाता है, कि अल्लाह ही राम है, नारायण है। अल्लाह और राम का सह-अस्तित्व पूर्वी बंगाल में सम्भव नहीं हुआ। और अल्लाह के अनुयाइयों ने ठोकरें मारकर उनको उनके उस घर और सम्पत्ति से भगा दिया जो उनके पुरखों ने पिछली १४ पीढ़ियों में अपनी गाढ़ी मेहनत से अर्जित की थी।

उसके बाद भी इस प्रकार के गीत गाना सचमुच ही बड़ी उदारता और सहन शीलता का परिचय देता है। किन्तु साथ-साथ क्या यह भयंकर विमूढ़ता, सामान्य ज्ञान हीनता और आत्महत्या प्रवृत्ति - की भी निशानी नहीं है।

इस प्रकार का उदार और पोंगापन्थी समाज कभी जिन्दा नहीं रह सकता और यही कारण है कि जब-जब भी बाहर से आक्रमण हुआ है यह मार्क्सवादी, गाँधीवादी, पूर्णब्रह्मगुरु, जन्म सिद्ध ब्रह्मचारी अपनी धोती लंगोटी और सोटी छोड़कर भाग खड़े होते हैं। अपने अनुयायियों को बचाना तो दूर, उनकी सहायता का भी ध्यान नहीं आता।

उस समय उनका उदारवादी ज्ञान, वाक्य पटुता और आत्मानुभूति धरी की धरी रह जाती है। उनके ध्यान में आना चाहिए था कि भारत को धर्म की मजबूत बुनियाद बना लें, हिन्दू समाज को संगठित कर उस बुनियाद पर खड़ा कर लें। जैसे शरीर जीवन का सम्बल है वैसे ही समाज धर्म का सम्बल है। समाज नहीं रहेगा तो धर्म का आचरण कौन करेगा?

यदि हिन्दू समाज संगठित नहीं है तो हमारे तैतिस कोटि देवी-देवता, हजारों धार्मिक पथ प्रदर्शक, धर्म गुरु, भगवानों और राजनीतिक नेताओं का जीवन ही संकट में पड़ जायेगा। या तो वह भाग जायेंगे या मारे जायेंगे और या उन्हें बलात् धर्म परिवर्तन करना होगा।

कहते हैं कि विभाजित पश्चिमी बंगाल में मुसलमान केवल ३५ प्रतिशत हैं, जिस दिन भी मुस्लिम ३५ से ५१ प्रतिशत हो जाएंगे, न वहाँ गाँधीवाद रहेगा, न मार्क्सवाद, न भजन, न कीर्तन, न तिलक, न पूजा और न आरती।

हमें यह भी बताने को कोई नहीं रहेगा कि ''सब धर्म एक समान'' हैं। यह कि ''मजदूर का कोई मज़हब नहीं होता है।'' यह कि 'हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई हैं और ये देश धर्म निरपेक्ष है।'' तुम हिन्दुओं की ही बात क्यों करते हो? पूर्वी बंगाल में आज कोई भी यह बढ़िया बातें नहीं करता। कर ही नहीं सकता।

जब प्रसिद्ध काली बाड़ी मन्दिर ढाका में तोपों के गोलों से ढहा दिया गया तो किसी ने ऊंगली तक नहीं उठाई जबकि प्रत्येक आदमी इस नितान्त सत्य को जानता था। इन सब तथ्यों को समझ कर ही हमको अपने धर्म, राजनीति, समाज तथा स्वयं

अपनी सुरक्षा का विचार करना चाहिए।

यदि हिन्दू असंगठित रहे तो?

अगर हिन्दू कमज़ोर, असंगठित और अल्पसंख्यक हो गये तो केवल उनके धर्म पर ही हमला नहीं होगा, उनके जीवन और सम्पत्ति पर भी हमला किया जायेगा। यह केवल पाकिस्तान का या पूर्वी पाकिस्तान (बंगला देश) का ही इतिहास नहीं है। यह पिछले एक हजार वर्षों की कहानी है कि किस प्रकार से हिन्दू देवी-देवताओं को अपवित्र किया गया और उनकी प्रतिमाएं तोड़ी गयीं? उससे उन देवी-देवताओं अथवा हिन्दुओं के आत्मसम्मान में किसी प्रकार की कमी नहीं हुई है।

प्रश्न यह उठता है कि क्या हमारे देवी-देवताओं का पराक्रम केवल हमारी धर्म पुस्तकों तथा प्रवचनों तक ही सीमित है? यह प्रश्न इतना मूर्खतापूर्ण नहीं है। केवल सौ वर्ष हुए इस देश की जनसंख्या ३० करोड़ थी और देवी-देवताओं की संख्या ३३ करोड़।

इसका मतलब यह हुआ कि यदि हर मनुष्य की रक्षा पर एक भी देवी-देवता नियत हो तब भी हम दूसरे देशों को वहाँ की ननसंख्या की रक्षा के लिए ३ करोड़ देवी-देवता निर्यात कर सकते थे। तो फिर ऐसा क्यों हुआ कि हमारे अन्दर इतनी बीमारियां दरिद्रता, कुपोषण, निरक्षरता, ढोंग, भ्रष्टाचार और स्वार्थपरता पनप रहे हैं। और क्यों प्रत्येक व्यक्ति का रक्षक एक से अधिक देवता होते हुये भी हिन्दुओं को १२०० वर्षों तक विदेशियों के हाथों अकथनीय अत्याचार भोगने पड़े।

– अनुवादक

भारत में आज भी ३४ लाख मठ और मन्दिर है। लगभग ८५ लाख साधु, सन्यासी, आश्रमवासी और संत महात्मा इस देश में मौजूद हैं। उनका मुख्य कर्तव्य है हिन्दू समाज में आत्मबल और साहस का संचार करना।

जब आवश्यक हो उचित सलाह देना और उनका मनोबल बढ़ाना। किन्तु महा आश्चर्य तो यह है कि यही वह लोग हैं जो सबसे पहले और सबसे अधिक भयभीत होते हैं, और वह भी तब जब पादरी और मौलवी सब मिलाकर कुछ हजार ही हैं। ऐसा क्यों है? यह प्रश्न कई बार पूछा जा चुका है और उसमें कहीं न कहीं, कोई न कोई रहस्य अवश्य छिपा हुआ है।

हिन्दुओं की संकीर्ण स्वार्थपरता

वास्तविकता यह है कि हम लोग स्वार्थी हैं और यही वह बड़ा रहस्य है। चाहे कोई साधु हो, चाहे सन्यासी, चाहे व्यापारी, राजनेता, शिक्षक या बुद्धिजीवी, प्रत्येक हिन्दू अत्याधिक आत्म-केन्द्रित होता है।

हिन्दू का सारा प्रयास अपने तक और अपने परिवार तक केन्द्रित रहता है। उसकी सारी विचारधारा और कर्म-परायणता वहीं तक सीमित है। उसकी सारी प्राण शक्ति उसी में खर्च हो जाती है। अपने समाज में उसे कोई विश्वास नहीं है। अगर विश्वास होता है तो सिर्फ अपने देवता पर, अपने गुरु पर अथवा ज्योतिषी पर और वह जीवन भर उसी पर आश्रित रहता है।

एक हिन्दू के जीवन में राज्य, समाज या देश की कोई महत्ता ही नहीं है। यही वह बड़ा रहस्य है और धोखा भी। इसी धोखे और ढोंग ने सारे हिन्दू समाज को आत्मविश्वास विहीन कर दिया

है। यह एक छिद्रान्वेषी समाज बन कर रह गया है, और आश्चर्य की बात तो यह है कि यह सिर्फ अपना ही छिद्रान्वेषण करता रहता है।

क्या हिन्दू समाज का संगठन करना संकीर्णता है?

यदि हिन्दुओं को संगठित करने का कोई प्रयत्न करता है तो यही समाज उसको बहुत संकीर्ण समझता है यद्यपि अपने दैनिक जीवन में वह अपना समय छोटे-छोटे दल, या क्लब बनाने में, जिनकी बुनियाद घोर जातिवाद, पार्टीवाद, ईर्ष्या और विवेकहीन टीका टिप्पणियों पर आधारित होती है, खर्च करते हैं।

अपने पड़ोसियों में उनका कोई मित्र नहीं होता क्योंकि उनसे मुकदमेबाजी होती है। वह अपने माता-पिता की घोर उपेक्षा करते हैं किन्तु सांई बाबा के पुजारी हैं। यही हैं वे लोग जो हिन्दू मुस्लिम एकता के नारे लगाते हैं।

संसार के सारे मजदूरों को संगठित करना चाहते हैं। वह अपने भगवान को प्रार्थना, भजन और कीर्तन से मूर्ख बनाना चाहते हैं जबकि अपना सारा समय लोगों को छलने और धोखा देने में लगाते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस तरह के लोगों में, जो अपने ही आत्महित के विरूद्ध कार्य करते हैं, एक प्रकार की आत्म-प्रवंचना तो पैदा हो जाती है किन्तु "सामान्य बुद्धि" वाले मामले में वह नितान्त कोरे होते हैं। वह ढोंग के बल पर जीवित रहना चाहते हैं।

वह समाज जो अपने ही विरूद्ध कार्य करता है धीरे-धीरे उसके पैरों के नीचे से धरती खिसक जाती है। आज हमारा धर्म, राजनीति, और अब दूसरे कार्यकलाप भी असत्य की बुनियाद पर खड़े हैं और यह हिन्दुओं के इतिहास के अनुकूल भी है। कम से कम उस इतिहास के अधिक भाग पर जिसमें आत्म रक्षा का कोई सामूहिक प्रयत्न नहीं किया गया।

उस मरीज का भला क्या करे कोई।
जो अपने मर्ज को ही दवा समझे?

संघे शक्तिः कलौयुगे

श्री गौरांग ने कहा था-

"संघे शक्तिः कलौयुगे" कलियुग में संगठन ही शक्ति है। उनका यह उपदेश हम बिल्कुल भूल गए। ऐसा कोई भी हिन्दू देवी-देवता नहीं जिसके हाथों में हथियार न हों।

किसी भी हिन्दू के घर जाइए वहां तुम्हें देवी-देवताओं की बहुत सी तस्वीरें अक्सर टंगी हुई मिलेंगी। लेकिन घर में साँप या बिच्छु मारने के लिए एक छड़ी भी नहीं मिलेगी।

भारत माँ की पूजा यानी समाज की सेवा

स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित् राम कृष्ण मिशन में पूरे वर्ष दरिद्रों की उपेक्षा की जाती है। केवल उसी समय जब कहीं बाढ़ आ जाती है तो दरिद्र नारायण प्रकट हो जाते हैं। बाकी समय में कोई उनकी परवाह नहीं करता है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था देश को संगठित करना परम आवश्यक है। अगले ५० वर्षों तक एक मात्र ध्येय भारत माँ की

पूजा है। उनका मतलब था समाज की सेवा।

हम उनकी इस बात को भूल गए। जड़ों में पानी डालने के बजाय टहनियों और पत्तों को सींच रहे हैं। इसलिए पेड़ सूखता और मरता जा रहा है। हमारा अपना जीवन भी घोर संकट में है।

हमको याद रखना चाहिए कि यदि समाज जीवित रहेगा तो ही हम सब भी जीवित रहेंगे। सब विचारवान हिन्दुओं को इस पृष्ठभूमि में अपने विचार एक दिशा में केन्द्रित करना है। कोई दूसरा कार्य इतना आवश्यक नहीं है।

हमारी सामान्य बुद्धि और हमारा पुराना अनुभव हमको बताता है कि इस परमावश्यक कार्य में एक क्षण भी देर नहीं करनी चाहिए। हिन्दुओं को एक ऐसा मजबूत संगठन बनाना चाहिए, जिसमें छुआछूत, बिरादरीवाद, प्रांतवाद जैसी बीमारियां न हों।

पेशेवर राजनीतिज्ञों को भी इस नियम का अनुसरण करना चाहिए। यदि हिन्दू समाज समाप्त हो गया तो वे भी समाप्त हो जायेंगे।

कोई भी राजनीतिक दल चाहे कितना भी असाम्प्रदायिक ही क्यों न हो उसकी मजाल नहीं कि वह मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र से किसी हिन्दू उम्मीदवार को जिता कर ले आये।

हिन्दुओं का संगठित होना केवल अपने लिये ही नहीं अपितु थोड़े से उन मुसलमानों के लिये भी आवश्यक है जो उदारमना हैं।

मुस्लिम समाज में छागला जैसे व्यक्तियों के लिये कोई स्थान नहीं है। यदि वह पाकिस्तान या ईरान में होते तो कत्ल कर दिये

गये होते। किन्तु हिन्दू समाज ने उनको सम्मान दिया और उनकी सेवाओं की सराहना की।

हिन्दुओं ने संगीत साम्राज्ञी नूरजहां को अपना कर सम्मान दिया, किन्तु जब उसने कहा कि गीत उसकी ईश प्रार्थना और संगीत उसका खुदा हो गया है तो यह मांग की गई कि उसको दुबारा मुस्लिम धर्म की दीक्षा लेनी पड़ेगी क्योंकि अपने उपरोक्त बयानों द्वारा वह मुस्लिम नहीं रही।

दाऊद हैदर नाम के एक बंगला देशीय कवि ने पैगम्बर मुहम्मद पर कुछ टीका-टिप्पणी कर दी थी।

उसके मुस्लिम साथियों ने इस कसूर पर उसे कत्ल करने का विचार किया था। उसने भाग कर भारत में शरण ली। यदि भारत मुस्लिम राज्य होता तो उसको निश्चित ही फांसी दे दी गई होती।

देश के उत्थान के लिए
स्वस्थ हिन्दू समाज आवश्यक है
हिन्दू संगठन को सहयोग देना,
हर हिन्दू का कर्तव्य है।

किसी भी हिन्दू राज्य में एक मुस्लिम मुख्यमंत्री हो सकता है जैसे बिहार में अब्दुल गफूर और महाराष्ट्र में अन्तुले, किन्तु क्या कोई भी आदमी काश्मीर में एक हिन्दू मुख्य मंत्री की बात सोच सकता है? यह सर्वथा असम्भव है।

इसलिए हिन्दू समाज को देश के उत्थान के लिए पूर्णतया स्वस्थ रखने की आवश्यकता है।

जो लोग हिन्दू समाज को संगठित करने की कोशिश कर रहे हैं उनको सहयोग देना हर हिन्दू का पहला कर्तव्य है। भारत सेवाश्रम संघ, विश्व हिन्दू परिषद*, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ*, आर्यसमाज और बजरंग दल आदि यह कार्य कर रहे हैं।

इनको सब प्रकार से सहयोग देना हर हिन्दू का कर्तव्य है। उदार न होते हुए भी हम उदारता का ढोंग न करें। इन लोगों को प्रतिक्रियावादी न कहें। थोड़ी सी सामान्य बुद्धि का होना आवश्यक है।

हमारी वैचारिक भूलभुलैया के कारण आधा भारत पाकिस्तान बन चुका है। पाकिस्तान, बंगलादेश, और खण्डित भारत में १२ करोड़ मुसलमान और एक करोड़ ईसाई विद्यमान हैं।

बहुत थोड़े से समय में विश्व हिन्दू परिषद एक लाख से अधिक मुसलमान व ईसाईयों को हिन्दू धर्म में वापस लाने में सफल हुई है। और भी बहुत से लोग अपने पूर्वजों के धर्म में वापस** आयेंगे।

हरे कृष्ण सम्प्रदाय वाले अच्छा काम कर रहे हैं। हमें उनकी ऊंचाईयों को अपने बौनेपन से नहीं नापना चाहिए। माइकेल स्का और फादर फेरार को देशद्रोह के अपराध में देश से निकाला गया।

---

* इन संगठनों पर शासन द्वारा प्रतिबंधित करने की मांग अकसर उठती रहती है।

** फरहाना ताज कृत- 'घर वापसी' नामक पुस्तक पढ़ें, जो आपको हमारे यहां विक्रय विभाग में मिल जायेगी।

– अतुल गुप्ता, व्यवस्थापक
(पुस्तक विक्रय विभाग)
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

अभी हाल ही में फादर डीसुजा की गिरफ्तारी हुई है। ये क्रिश्चियन फादर ही असली विदेशी एजेंट है।

यदि इस्कॉन वाले विदेशी जासूस होते तो वह सारी दुनिया में हिन्दू मन्दिर न बनाते फिरते। वह यह कष्ट क्यों उठाते?

दूसरी ओर बन्दूक और तोपें बनाने की फैक्ट्रियां बिहार प्रान्त के कस्बा बिहार शरीफ और उ०प्र० के मुरादाबाद शहर के मुस्लिम मुहल्लों में पकड़ी गई हैं। लखनऊ के मुस्लिम होटल में भयंकर डायनामाइट की छड़ें पकड़ी गई थीं। मुसलमान और ईसाई खुल्लम खुल्ला, हिन्दू समाज की कतई परवाह न करते हुए राष्ट्रद्रोही गतिविधियों में लीन हैं।

हिन्दू समाज उठने के लिए अंगड़ाई ले रहा है।

अब पहली बार हिन्दू समाज उठने के लिए अंगड़ाई ले रहा है। इस जाग्रति से देश द्रोहियों को छोड़कर किसी को घबराने की आवश्यकता नहीं। हमें कोई बताये क्या हिन्दुओं ने आज तक एक भी गिरजाघर को या मस्जिद को नष्ट किया है? हमारे पूरे इतिहास में ऐसी एक भी मिसाल नहीं मिलेगी। किन्तु आज भी यदि कोई मुसलमान किसी हिन्दू स्त्री को भगा ले जाता है तो किसी भी मुसलमान के मुख से उसके विरोध में एक शब्द भी नहीं निकलता। अपनी इस खामोशी से वह इस प्रकार के दुराचार को बढ़ावा देते हैं।

मैं किसी दुर्भावना से ऐसा नहीं कह रहा हूँ बल्कि समाज की वर्तमान स्थिति का सही आंकलन पेश कर रहा हूँ। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दू को भी जीवित रहने का अधिकार है। परन्तु दुख के साथ लिखना पड़ रहा है कि आज हिन्दू अपने

ही देश में निर्वासितों जैसा जीवन जीने पर मजबूर हो रहा है।

'हम दो हमारे दो' तथा 'हम दो* हमारे पच्चीस'

किसी भी सभ्य देश में प्रत्येक नागरिक के लिए समान कानून होता है। किन्तु इस देश में मुसलमानों के लिए अलग कानून है।

एक हिन्दू एक ही पत्नी रख सकता है और इसी बुनियाद पर वह दो बच्चों की बात सोचता है, किन्तु मुसलमान चार विवाह कर सकता है और इन चार से अनगिनत बच्चे पैदा कर सकता है।

देखिये हिन्दू के लिए नारा है-

''हम दो हमारे दो''। मुसलमान का नारा है ''हम दो हमारे पच्चीस''। इस देश को मुस्लिम बाहुल्य इस्लामी राज्य बनाने में इस रफ्तार से कितना समय लगेगा, यह आप खुद सोचें?

इस देश के तमाम राजनीतिक दल ऊंची-ऊंची बातें करते हैं और कुछ तो अरब देश के धन से खरीदे भी जा चुके हैं और इस प्रकार उन्होंने इस देश को मुस्लिम देश बनाने की गहरी साजिश रची हुई है। उन लोगों को जो उनकी साजिश को भांप गए हैं और उनके विरूद्ध आवाज उठाते हैं, उन्हें यह अरब के

---

* प्रत्येक मुसलमान को चार-चार बीबियाँ रखने का खुदायी आदेश है, इसलिए एक-एक बीबी से पन्द्रह-बीस सन्तान पैदा करना तो हर मुसलमान के लिए एक सामान्य सी बात है। जबकि एक ही बीबी से दस-बारह औलादें तो हर मुसलमान के यहां प्रायः देखने को मिलती हैं। इस स्थिति में आप खुद सोचिये, इस देश के भविष्य का क्या होने वाला है......? - लाजपतराय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)

एजेन्ट प्रतिक्रियावादी कहते हैं, और इस प्रकार जनता का ध्यान उधर से हटाने की कोशिश करते हैं।

इस दोहरे आक्रमण से देश की रक्षा कौन करेगा? केवल संगठित हिंदू समाज ही ऐसा कर सकता है। यदि पाकिस्तान और बंगला देश जैसे मुस्लिम देश में बहुविवाह को गैर-कानूनी करार देकर परिवार नियोजन लागू किया जा सकता है तो क्या कारण है कि भारत में ऐसा न किया जाए? क्या यह इसलिए है कि हमने बुद्धिहीन नेताओं की एक फौज खड़ी कर ली है?

हमें अनिवार्य परिवार नियोजन लागू करने के लिए नेताओं और दलों पर ज़ोर डालना चाहिए। हमें हिंदू-कोड बिल को भंग करने की माँग करनी चाहिए।

हिन्दू नेताओं ने हिन्दू भावनाओं की ओर कोई ध्यान दिया ही नहीं। वह समझते हैं कि हिन्दू संगठित नहीं है। उनकी स्मरण शक्ति कमज़ोर है और वह भूतकाल के इतिहास के प्रकरणों अर्थात् पाठों को भूल गए हैं। इसलिए वह स्वार्थवश हिन्दू हितों की हानि करते हैं। हिन्दुओं के गौरव का तिरस्कार करते हैं।

गोवध निषेध के बारे में चुप हैं। यदि घुसपैठिया मुसलमान हैं तो यह लोग उसके खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोलते। तीन लाख मुस्लिम घुसपैठिये बंगला देश से पश्चिमी बंगाल में घुस आये हैं। मटिया बुर्ज और पार्क सरकस नामक कलकत्ते के इलाकों में और मुर्शिदाबाद में वह जम गये हैं।

अकेले कलकत्ते में लगभग चार लाख मुस्लिम घुसपैठिए मौजूद हैं, जिनके नाम सरकारी कागजों पर दर्ज हैं। हर राजनीतिक दल का संरक्षण इनको प्राप्त है।

एक ओर तो कम्युनिस्ट पार्टी इन घुसपैठियों को राशन कार्ड वितरित करती है, और दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी निर्वाचन सूचियों में उनका नाम दर्ज कर देती है। उनका उद्देश्य केवल आने वाले चुनावों में जीतना है, फिर समाज का चाहे कुछ भी अन्जाम क्यों न हो।

कलकत्ते में सड़कों को खाली कराने के अभियान में ज्योर्तिबसु और जतिन चक्रवर्ती ने तमाम हिन्दू ठेले वालों को पटरियों से भगा दिया, किन्तु उन मुस्लिमों के विरूद्ध वे कुछ न कर सके जो अपने को बिहार में रहने वाले बताकर बंगला देश से वहाँ घुस आए हैं और उन्हीं पटरियों पर समान बेचते हैं।

बंगाल के डिप्टी स्पीकर मियां कलीमुद्दीन इन मुस्लिमों के साथ खड़े होते हैं। वे मुस्लिम कान्फ्रेन्स के प्रधान भी हैं, और हर मीटिंग में जोर शोर से बयान देते हैं कि वे मुस्लिम पहले हैं और हिन्दुस्तानी बाद में।

कोई भी हिन्दू नेता उनके इस बयान पर आपत्ति नहीं करता। समय आ गया है जब हम गहराई में जाकर विचार करें कि इस देश के भविष्य का प्रहरी कौन है? अगर हम सोच विचार ही करते रह गए और तुरन्त स्थिति में सुधार लाने के लिए ठोस कदम न उठाए तो शायद हमको आगे समय ही नहीं मिलेगा।

आप जितना समझते हैं उससे कहीं अधिक देर हो चुकी है। अधिक देर हो जाने के कारण अब सिवाय पछताने के और कुछ हाथ नहीं लगेगा।

गोरक्षा का सवाल

आज हमारे धार्मिक पथ-प्रदर्शक, राजनीतिज्ञ, पत्रकार, व

लेखक सब पर **'दैवी प्रेरणा'** का भूत सवार है। उनका एक मात्र ध्येय हिन्दू धर्म व हिन्दू संस्कृति की आलोचना करना रह गया है। वे अत्यधिक सभ्य होने का बहाना करते हैं और इस सभ्यता का सबूत वह हिन्दू मान्यताओं को नष्ट करके देना चाहते हैं। आज 'आनन्द बाजार पत्रिका' और 'आजकल' जैसे समाचार-पत्र, गौ-मांस खाने की वकालत करते हैं।

यदि कोई पाठक उन्हें कोई विरोध पत्र लिखता है तो वह प्रकाशित नहीं किया जाता, प्रगतिशीलता के आवेश ने उचित-अनुचित के विचार को समाप्त कर दिया है। वह अच्छी तरह जानते हैं कि इस्लाम में गाय की कुर्बानी देना अनिवार्य नहीं है।

दूसरी ओर यह भगवान गोपाल कृष्ण की भूमि है। यहाँ गाय का बड़ा सम्मान है। यदि किसी गाय को कत्ल किया जाता है तो ९५ प्रतिशत लोगों की आत्मा दुखी होती है। जबकि-

- गांधी ने कहा था कि मुझे गौकुशी बन्द करना भारत की स्वतन्त्रता से भी अधिक प्रिय है।
- नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के खाने में गौ मांस का निषेध कर दिया था।
- भारतीय संविधान में गौ-हत्या रोकने का स्पष्ट निर्देश है।
- सर्वोच्च न्यायालय ने गौ-वध के विरोध में आदेश दिया हुआ है।

किन्तु यह सब बेकार हैं। संविधान, सर्वोच्च न्यायालय, भारत का बहुसंख्यक हिन्दू समाज इन सबकी उपेक्षा की जा

सकती है। क्योंकि हिन्दू समाज संगठित नहीं है। मुसलमान संगठित है। इसलिये उनकी असंवैधानिक मांगे भी मान ली जाती हैं। अगर एक हजार तर्कों द्वारा सुअर का मांस खाने की वकालत की जाये तो कोई भी उसके पक्ष में कलम नहीं उठायेगा।

अपमानजनक घटनायें

नाटकों, फिल्मों में, हिन्दुओं के पूज्य देवी-देवताओं की योजनापूर्वक आये दिन खिल्ली उड़ायी जाती है। हिन्दू, मुस्लिम सौहार्द दिखाने के लिए मुसलमान लड़के द्वारा हिन्दू लड़की को भगा लिया जाना दिखाया जाता है।

नायक और नायिका जब कठिनाइयों में होते हैं तो वह गिरजाघर में या मस्जिद में शरण लेते हुए दिखाये जाते हैं। हिन्दू पंडित और पुजारी ठग और बदमाश बनाकर दिखाये जाते हैं। वे अपनी बोतलों में शराब व पैंटों में अफीम ले जाते हुए स्मगलर व बदमाश के रूप में चित्रित किये जाते हैं। मौलवी व पादरी प्यार और सौहार्द के अवतार दिखाये जाते हैं।

जर्मन भाषा में लिखे गये ब्रेट नाटक (Brecht's Drama) का किसी ने बंगाल में अनुवाद किया और अनुवाद में हिन्दुओं के ब्रह्मा, विष्णु और महेश को तीन विदूषकों के वेश में पेश किया। उनके मुंह से गंदी बातें कहलवायी गयी।

किसी भी हिन्दू भक्त को इस से तकलीफ नहीं पहुंची। सच तो यह है कि निम्न श्रेणी के पत्रकारों और नाटककारों के मनों में हिन्दू दर्शकों के प्रति थोड़ा सा भी सम्मान नहीं है।

इस देश के पत्रकार हिन्दू मुस्लिमों के बीच हुये दंगों को बिना नाम दिये "दो सम्प्रदायों के बीच झगड़ा" लिखते हैं। इस

प्रकार की संदिग्ध भाषा का प्रयोग इसलिए किया जाता है कि इससे आगे स्थिति खराब नहीं होगी। किन्तु नीयत सत्य को छिपाने की होती है।

यदि कभी हिन्दू समाज के दो वर्गों में झगड़ा होता है तो मोटे-मोटे अक्षरों में **''स्वर्ण हिन्दुओं द्वारा हरिजनों पर भयानक अत्याचार''** की खबरें छापी जाती है (भले ही उस झगड़े का वर्ग विशेष से दूर का भी कोई सम्बन्ध न हो) वह ऐसा क्यों करते हैं? क्योंकि अधिकतर पत्रकार हिन्दू विरोधी हैं। उन्हें ईश्वरीय ज्ञान भले ही प्राप्त हो किन्तु सामान्य व्यवहारिक ज्ञान शून्य है। वे नहीं चाहते कि हिन्दू समाज बलवान बने।

मालदा में हुये दंगों के दौरान पत्रकारों ने लिखा था-

''मुसलमानों और घोष परिवारों के बीच दंगा।'' क्या इसका मतलब यह है कि घोष परिवार हिन्दू नहीं हैं? यह महाशय आसाम की सही-सही परिस्थिति का चित्रण जनता के सामने आज भी नहीं रख पाये। उन्होंने यह दिखाने की कोशिश की है कि असम में वही पुरानी **'बंगाली भगाओ'** समस्या है।

इन पत्रकारों ने जान-बूझकर लगातार पब्लिक को भ्रमित करने की कोशिश की है। अगर यह सत्य है कि असमी बंगालियों को खदेड़ रहे हैं तो ऐसा क्यों है कि एक भी बंगाली मुस्लिम आसाम से नहीं भगाया गया?

क्या बंगाली का अर्थ केवल बंगाली हिन्दू है? पूर्वी बंगाल के सब निवासी बंगाली है। फिर ऐसा क्यों है कि बंगला देश से बार-बार हिन्दू ही भगाये जाते हैं। यह पत्रकार सीधे प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं दे सकते हैं। इन्होंने हमेशा आसाम की समस्या

को घटाकर बताने की कोशिश की है। किन्तु असलियत यह है कि शायद ही कभी पहले इस पूरे देश में इतना बड़ा भावनात्मक आन्दोलन हुआ हो।

यदि इसकी सच्चाई को जानना है तो देश के उर्दू अखबारों की हलचल को देखने से ही स्थिति का सही आंकलन हो जायेगा। आसाम आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य बंगला देश से घुस आये मुस्लिम घुसपैठियों को वहाँ से निकालना है। यह आन्दोलन हिन्दू शरणार्थियों के विरूद्ध नहीं है। कोई भी हिन्दू वह किसी भी देश से आया हो इस देश में घुसपैठिया नहीं है। अजनबी भी नहीं है। वह शरणार्थी भी नहीं है। यह देश उसकी मातृभूमि है।

बंगला देश से उन्तीस लाख मुस्लिम आसाम में आये हुए हैं। इस समस्या का समाधान किसी के पास मालूम नहीं होता। होठों पर लल्लो-चप्पो और मस्तिष्क में 'ईश्वरीय प्रेरणा' लिये हुए पूरा हिन्दू समाज उस मनुष्य की तरह अपनी मौत का इन्तजार कर रहा है जैसे कोई मृत्यु की तरफ मुंह बाये रेतीली दल-दल पर खड़ा हो।

दुनिया का सबसे अधिक उदारवादी सहनशील और अहिंसक समाज जो परमात्मा का दर्शन केवल मानव मात्र में ही नहीं वरन् चिड़ियों चौपायों और कीड़े मकोड़ों में भी करता है। वह हिन्दू समाज आज भयानक खतरे* में है। यह सत्य तथ्यों, तर्कों, आंकड़ों की रोशनी में नग्न होकर हमारे सामने खड़ा है। भयानक

---

* मेरे द्वारा लिखित पुस्तक "हिन्दुओं का अस्तित्व खतरे में" अवश्य पढ़ें। एतद् विषय पर यह पुस्तक पूर्ण प्रकाश डालती है।

– लाजपतराय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)

अनिष्ट से बचने के लिये हिन्दुओं को जल्द से जल्द संगठित होना नितान्त आवश्यक है।

चाहे कोई कुछ भी कहे भारत का दर्शन हिन्दू दर्शन है। यह गंगा की तरह है जिसमें हरिद्वार से कलकत्ता तक सैकड़ों नदी नाले मिलते चले जाते हैं, किन्तु गंगा नहीं बदलती, वह वैसी की वैसी ही शुद्ध रहती है जैसी पहले थी। हिन्दू संस्कृति भी ऐसी ही है। इसीलिए यह परम आवश्यक है कि हिन्दू संस्कृति जो लाखों वर्ष पुरानी है, जो संसार में सबसे श्रेष्ठ और नैतिक है, उसको इन मूर्ख राजनीतिज्ञों, बौने विचार के बुद्धिजीवियों और वेश प्रताप से पूजे जाने वाले साधु सन्तों से बचाया जाये। यह पूरे हिन्दू समाज के जीवन-मरण का प्रश्न है।

किन्तु यदि हमें सफलता न मिली तब? कालान्तर में आपको हिन्दुओं का दर्शन केवल इस देश के विभिन्न चिड़ियाघरों में ही हो सकेगा। वह गैर हिन्दू पिता, जो जबर्दस्ती मुसलमान बना लिये गये होंगे, अपने बच्चों का हाथ पकड़कर उन्हें चिड़ियाघरों में ले जायेंगे। और उन्हें बतायेंगे कि देखो किसी जमाने में इस देश के अन्दर यह जन्तु भी होते थे जो संख्या में बहुत अधिक थे। उन्हें हिन्दू कहा जाता था। उनके पास वेद, उपनिषद और गीता नाम की बहुत अच्छी-अच्छी पुस्तकें होती थीं। उनके पास गाँधीवाद, मार्क्सवाद और समाजवाद जैसे वाद भी थे।

किन्तु उनके पास सामान्य बुद्धि की कमी थी और इसलिये वे आज बिल्कुल समाप्त हो चुके हैं। उनमें से केवल थोड़े से जीवित हिन्दू हमारे चिड़ियाघरों में शेष बचे हैं। जब वे भी मर जायेंगे तो उनको म्यूजियम में स्थान दे दिया जायेगा।

इस्लाम केवल एक मजहबी विचारधारा और कुछ प्रार्थनाओं का संग्रह ही नहीं है अपितु एक पूर्ण सैधान्तिक प्रणाली है जो अपना एक सुधारात्मक प्रोग्राम लागू करना चाहता है-

- इसके लिए वह तमाम इंसानों को निमंत्रण देता है। यह दावत जो लोग भी कबूल कर लें-
- इस्लामी समाज के सदस्य बन सकते हैं।
- यह पार्टी वजूद में आते ही अपने जीवन उद्देश्य के लिये जिहाद शुरू कर देती है।
- इसके वजूद में आने का उद्देश्य ही यह है कि यह गैर-इस्लामी सत्ता को मिटाने की कोशिश करे और उसके स्थान पर शरीयः शासन और इस्लाम का दूसरे सभी धर्मों पर वर्चस्व स्थापित् करें।

मुसलमान केवल धार्मिक प्रचारक नहीं है अपितु खुदाई फौजदारों की एक जमाअत है। देखिये कलामे पाक (कुरान) में अल्ला तआला ने फरमाया है कि-

व क़ातिलू-हुम् हत्ता ला तकू-न फ़ित्तुंव।
व............इल्ला अ़लज़्ज़ालिमीन।।१९३।।

(कुरान सुरः बकर आयत १९३)

अनुवाद- और उनसे उस वक्त तक लड़ते रहना, कि जब तक फ़साद खत्म न हो जाये और सारे मुल्क में सब जगह खुदा ही का दीन हो जाये........।।

(जिहाद फीसबीलिल्लाह- पृ.२२ से २४, जमाअते इस्लामी के निर्माता मौलाना अब्दुल आला मौदूदी के १९३९ में दिये गये भाषण का संपादित और संक्षिप्त अंश। पुनः प्रकाशित फरवरी १९६८ व जनवरी १९७८, मरकजी मकतबा जमाअते इस्लामी हिन्द, दिल्ली-६)

आत्महत्या पर कटिबद्ध : हिन्दू समाज

लेखक- प्रो० डा० रघुवीर
एम.ए., पी.एचडी., डी.लिट., लाहौर
(मूल अंग्रेजी)

(अनुवादक- पुरुषोत्तम योग)

नोटः- डॉ० रघुवीर ने यह लेख अर्ध शताब्दी से भी अधिक समय पहले लिखा था। पाठक देखेंगे कि भारत और हिन्दू समाज के लिये यह आज भी उतना ही अर्थ पूर्ण है जितना उस समय था।

यदि उस समय 'ब्रिटिश विरोधी' भाषा की कटुता से किसी व्यक्ति की राष्ट्रीयता नापी जाती थी तो उसका मापदंड आज हिन्दू और हिन्दुत्व विरोधी भाषा की कटुता हो गया है।

यदि 'हिन्दुस्तानी' भाषा की भारतीयता देखनी हो तो दूरदर्शन पर 'खबरें' प्रसारण सुनें जिसकी फारसी युक्त भाषा है, जिसे हिन्दू तो हिन्दू ९९ प्रतिशत मुसलमान भी नहीं समझ सकते। परन्तु घोर आश्चर्य तो यह है कि इन राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को जन्म देने और लालन-पालन करने वाले सिर्फ ये हिन्दू ही हैं, मुसलमान नहीं।

देखिये हामिद दलवाई ने ठीक ही कहा है-

मेरा स्पष्ट कहना यह है कि एक प्रकार के हिन्दू हैं जो मुसलमानों का विचार करने मात्र से भय खाते हैं।

......प्रत्येक संकट की घड़ी में इस प्रकार के हिन्दू अपने को मुसलमानों से भी श्रेष्ठ मुसलमान होने का ढोंग करने लगते हैं। अपने इस व्यवहार से वह उन मुसलमानों के मार्ग में बाधा बन जाते हैं जो मुसलमानों में कट्टरपन कम करने के प्रयास कर रहे हैं।

- अनुवादक

इस बात पर सब सहमत हैं कि भारत एक राष्ट्र बने। कदाचित इस बात पर भी सब सहमत हैं कि इस देश के निवासियों में एक राष्ट्र होने की भावना के विकास का अभी प्रादुर्भाव नहीं हुआ है।

भारत की राष्ट्रीयता अभी केवल ३० वर्ष पुरानी है। आज भी यहाँ राष्ट्रीयता की स्पष्ट व्याख्या का नितांत अभाव है। यहाँ राष्ट्रीयता केवल एक बिन्दु पर आधारित है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद से छुटकारा

इस कारण प्रत्येक भारतीय की राष्ट्रीयता उसके द्वारा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध प्रयोग की जाने वाली भाषा की कटुता से नापी जाती है। यह मुददा पूरे राजनीतिक भारत के मस्तिष्क पर छाया हुआ है।

दूसरा संदर्भ जिसमें राष्ट्रीयता शब्द का प्रयोग किया गया है वह आर्थिक संदर्भ है। किन्तु इस संदर्भ में भी वह नितांत अस्पष्ट और अपूर्ण है।

राष्ट्र का मापदंड

पश्चिम में राष्ट्र का मापदंड उसकी भाषा है किन्तु भारत में ऐसे तत्व उभरकर आये हैं जिन्होंने भाषा को पीछे ढकेल दिया है, यहाँ हिन्दू मुस्लिम प्रश्न शुद्ध राष्ट्रीयता के मार्ग में बाधा बन कर खड़ा हुआ है।

यह बड़े खेद का विषय है कि हिन्दू जो प्रत्येक परिभाषा के अनुसार इस देश के स्वामी हैं बौद्धिक रूप से बिल्कुल अ-हिन्दू हो गये हैं। फलस्वरूप नितान्त अ-हिन्दू और राष्ट्र विरोधी विचारों को राष्ट्रीयता के नाम पर स्वीकार किया जा रहा है। इसका परिणाम हिन्दुओं के लिए आत्महत्या है।

विश्व के इतिहास में ऐसा कोई दूसरा राष्ट्र अथवा मजहब, जिसे धर्म की संज्ञा दी जाती है, नहीं है जिसमें आत्म हत्या की इतनी भर्त्सना की गई हो, जितनी हिन्दू धर्म में की गई है। फिर भी हिन्दू समाज आज आत्म-हत्या करने पर कटिबद्ध है।

इस गर्हित राष्ट्रीय पाप की जिम्मेदारी हिन्दू नेताओं और धर्माचार्यों पर निर्भर है। साधारण हिन्दू समाज पर नहीं।

तलवार के भय से धर्मान्तरित

मुसलमानों को राष्ट्रीय धारा में लाने के स्थान पर जैसा कि टर्की और परशिया में हो रहा है उसी तर्ज पर भारत में भी विपरीत दिशा में प्रयास किये जा रहे हैं।

भारतीय मुसलमान विश्व-इस्लामवाद में विश्वास करते हैं जिसका अर्थ उनके लिये अरबवाद है और हिन्दू निर्लज्जता से इस कार्य में उनके सहयोगी बने हुए हैं।

इस बात का सबको ज्ञान होना चाहिये कि भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक पराभव अब से १००० वर्ष पहले प्रारम्भ हुआ था जब बर्बर मुसलमानों ने यहाँ पर आकर लूटमार शुरू की और असंगठित उत्तर भारत के कुछ भागों पर अपना अधिपत्य जमा लिया।

इन पिछले १००० वर्षों में हिन्दुओं ने अपनी राजनीतिक सूझ-बूझ का कोई परिचय नहीं दिया। उत्तर पश्चिम से आई इन जंगली और असभ्य जातियों ने कौन सा अत्याचार नहीं किया? उनमें से एक ने तो ऐसे अत्याचार किये जो संसार के किसी भी धर्म के नाम पर कलंक का टीका ही स्वीकार किये जायेंगे।

दरिद्रों, लाचारों और पद-दलितों को तलवार के सामने खड़ा कर दिया गया। उनके सामने सिर्फ दो ही विकल्प थे। विजेता का धर्म (इस्लाम) स्वीकार करना अथवा सिर कटवाना।

प्रेम ईर्ष्यालु होता है

भारत में आज की स्थिति इसी प्रक्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न हुई है। तलवार के बल पर धर्मान्तरित इन लोगों की प्रेम धर्म रज्जु अर्थात् प्रेम की रस्सी उत्तर पश्चिम और पश्चिम के देशों से जुड़ी हुई है, भारत से नहीं। हमारे राजनीतिक नेता असुविधाजनक कटु कष्टदायक और सत्य का सामना करने को तैयार नहीं है।

यदि भारत में सच्चे राष्ट्रवाद का जन्म होना है तो इन परिस्थितियों को क्षण भर के लिए भी सहन न कर बदलना होगा।

प्रेम ईर्ष्यालु होता है, यदि आप सच में ही भारत को प्यार

करते हैं तो आप दूसरे देश को प्यार नहीं कर सकते। हम में इतना साहस होना चाहिये कि भारत के समस्त नागरिकों को बतायें कि भारत ने उन्हें जन्म दिया है।

भारत ने उनको सुरक्षा दी है। उनका लालन-पालन किया है। इस कारण भारत उनसे अपेक्षा करता है कि वह एक मात्र भारत देश के प्रति वफादार* हों। एक मात्र उसी से प्रेम करें और दूसरे देशों को विदेश से अधिक और कुछ न समझें।

भाषा का प्रश्न

जरा सोचें तो हिन्दू जैसे बुद्धिमान, वृद्ध और अनुभवी राष्ट्र का भाषा जैसे सरल और सहज प्रश्न पर भी दमन किया जा रहा है।

यदि हम अभी सत्य अर्थों में राष्ट्रीय नहीं हुये हैं और प्रत्येक

---

* इस वफ़दारी का एक परिचय अभी हाल में ही सामने आया है, जिसमें साम्प्रदायिक आधार पर एक मुस्लिम राजनैतिक दल के निर्माता व सांसद श्री असदुदुदीन ओबैशी, हैदराबाद का दुखद बयान आया है कि- 'मैं भारत माता की जय नहीं बोलूंगा' चाहे मेरी गर्दन पर छुरी ही क्यों न रख दी जाये, अनेकों टी०वी० चैनलों पर इस मुद्दे पर बुद्धिजीवियों में बहस हुई सभी ने अपनी-अपनी प्रतिक्रियायें व्यक्त की, मैं ज्यादा विस्तार में जाने के बजाय सिर्फ संक्षेप में इतना ही कहूंगा कि- इससे श्री ओबेशी जी की मानसिकता का पता चलता है, भविष्य में हो सकता है कि वो अपनी वाल्दा (मां) और अपने अब्बू (बाप) को मां-बाप ही न मानें! इसमें कोई सन्देह नहीं, वह तो दूसरे हो सकते हैं, परन्तु इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि भारत माता का अपना अस्तित्व अपरिवर्तनशील है वह बदल नहीं सकता, मैं तो यही कहूंगा कि- खुदा ओबैशी पर रहम अता फरमायें और शैतान को उनसे दूर करें, क्योंकि अगर यही बयान वो किसी इस्लामिक देश में उसके खिलाफ देते तो उन्हें तुरन्त उसके परिणाम का पता चल जाता। अस्तु!!

– लाजपतराय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)

भारतवासी को सच्चा राष्ट्रीय नहीं बना पाये हैं तो इसका कारण यह है कि हिन्दुओं को यथार्थ राष्ट्रीय नहीं बनने दिया जा रहा है।

हम यह तो बड़े जोश खरोश से कहते हैं कि हम ब्रिटिश साम्राज्यवाद के सामने नत मस्तक नहीं होंगे किन्तु हमें उतने ही जोश से यह भी कहना चाहिये कि हम उन मुसलमानों द्वारा अपने ऊपर लादी गई गुलामी के सभी चिन्ह मिटा देंगे जिनको मरे जमाना गुजर गया है और जो हमारे राष्ट्रीय इतिहास पर लगे कलंक के चिन्ह हैं।

पंजाब और भारत के दूसरे प्रान्तों में स्कूलों, न्यायालयों और प्रशासन में उर्दू का प्रयोग हो रहा है। कहा जा रहा है कि हिन्दी और उर्दू को मिलाकर एक नई भाषा बनाई जाये जिसका नाम ‘‘हिन्दुस्तानी’’ रखा गया है।

कोई नहीं जानता कि इस मिलावट की प्रक्रिया क्या होगी? कोई नहीं जानता कि इस उर्दू में फारसी और अरबी जैसी विदेशी भाषाओं के कितने शब्दों को आगे चल कर घुसेड़ा जाता रहेगा। जिसके कारण वह फारसी अरबी अधिक और हिन्दुस्तानी कम होती चली जायेगी।

इस प्रकार का कोई नियम नहीं बनाया गया है। लिपि के विषय में कहा जा रहा है कि इस नई भाषा को लिखने के लिये देवनागरी अथवा फारसी कोई भी लिपि प्रयोग की जा सकती है। किन्तु भारत की दूसरी लिपियां जैसे बंगाली, गुजराती इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यह बिल्कुल बेहूदी बात है।

आज हम अपने ही देश में विदेशी बनकर रह रहे हैं

स्व-अभिमान, स्व-निर्णय, स्व-विकास और स्व-तंत्रता ही वह शब्द हैं जिनका अंततः हमारे राजनीतिक जीवन में किन्हीं सीमित अर्थों में नहीं अपितु असीमित अर्थों में उपयोग किया जाना होगा। किसी भी भारतीय भाषा को हम विदेशी लिपि में क्यों लिखें?

हम जो अपनी राष्ट्रीयता पर गर्व करते हैं, फारसी लिपि का उपयोग क्यों करें जो निश्चिय ही विदेशी है?

क्या यह हमारे लिये स्थायी शर्म और बदनामी की बात नहीं होगी? विदेशी वर्णमाला का उपयोग वही असभ्य लोग करते हैं जिनकी अपनी कोई वर्णमाला नहीं होती।

क्या हम भविष्य में आने वाली अपनी पीढ़ियों को यह साक्ष्य विरासत में छोड़ना चाहते हैं कि हमारे पास लेखन के लिये अपनी कोई लिपि नहीं थी? क्या यह हमारे लिये लज्जाजनक स्थिति नहीं है?

हिन्दुओ! यदि तुम इस देश के मुसलमानों में भारतीयता का संचार नहीं कर सकते तो तुम फारसी-करण, उर्दू-करण अथवा अरबी-करण द्वारा अपने को अपमानित, विकृत और भ्रष्ट क्यों होने देते हो?

राष्ट्रीय भारतीय होने के नाते यह सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है कि इस देश का प्रत्येक नागरिक इस देश पर अभिमान करे। वह किसी भी दशा और क्षेत्र में इस पर किसी भी दूसरे देश

द्वारा गुलामी लादे जाने में सहयोगी न बने।

हमें लज्जा आनी चाहिये यदि कोई भी भारतीय शिशु विदेशी पुष्पों, चिड़ियों अथवा महापुरुषों के गीत गाये। हम अपने ही देश में विदेशी बनते चले जा रहे हैं। इस प्रक्रिया का अंत होना चाहिये।

हमें कम से कम इतना साहसी तो होना ही चाहिये कि हम अपने लिये यह सुनिश्चित कर सकें कि हमारी किसी भी संतान का विदेशीकरण नहीं होगा।

प्रत्येक हिन्दू बालक-बालिका को शुद्ध भारतीय बनाओ जिससे वह भविष्य में बनने वाले (हिन्दू) राष्ट्र की रीढ़ बन सके।

(मराठा ६-४-१९४० से उद्धृत)

मुस्लिम विद्वानों द्वारा दिये गये कुछ ज़हरीले सन्देश

हिन्दुस्तान दारुल हर्ब अर्थात् शत्रु देश है। वह उस वक्त तक दारुल हर्ब रहेगा जब तक कि उस देश में कुफ्र का गल्बा अर्थात् उसका वर्चस्व वहां पर कायम रहेगा। अर्थात् जब तक इस भारत देश में गैर मुस्लिमों की हुकूमत रहेगी-

हिन्दुस्तान में जब से इकतदारे-इस्लाम अर्थात् इस्लामी सत्ता खत्म हुई, तब से ही वह दारुल हर्ब है-

- मौलाना हुसैन अहमद मदनी

यह अत्यंत आवश्यक है कि-

इस निज़ामे खुदाबंदी अर्थात् इस्लामी हुकूमत को मजबूती से कायम किया जाए। उलमाए-हिन्द ने सदैव इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये कोशिश की है। परन्तु हाय दुर्भाग्य वास्तविक उद्देश्य पूरा न हो सका, बस! यह ज़रूरी प्रतीत हुआ कि-

आह्वान-दल-बलियालैन अर्थात् दो मुसीबतों में से छोटी मुसीबत के नियम को अख्तियार किया जाये और हिन्दुस्तान की आजादी के लिये संयुक्त जद्दोजहद में हिस्सा लिया जाए।

यद्यपि संयुक्त जद्दोजहद से प्राप्त होने वाली आजादी निजामें इस्लामी (इस्लामी हुकूमत) न कहला सकेगी, फिर भी बहुत सी कठिनाइयां और सख्त रुकावटों के दूर हो जाने से वास्तविक उद्देश्य के लिये रास्ता खुल ही जायेगा।

– अध्यक्षीय भाषण, मौलाना हुसैन अहमद मदनी सालाना अधिवेशन जमीयते उल्माए हिन्द, लाहौर, सन् १९४२ ई०)

मौलाना हुसैन अहमद मदनी स्वीकार करते थे कि–

हिन्दू मुसलमानों की संगठित राष्ट्रीयता, आजादी तथा समृद्धि के लिए संगठित प्रयास करना एक विशेष मामला है, जिसका ताल्लुक सिर्फ मुल्क-ए-हिन्दुस्तान और उसके बसने वालों से और उनके सांसारिक जीवन से है। यह भावी स्थिति के सामने एक अर्जी (अस्थायी) और जिल्ली (अवास्तविक) चीज है और जब तक किसी मुल्क में भिन्न-भिन्न कौमें और मजहब बसते हैं, तभी उनकी ज़रूरत है। सबके सब मुसलमान हो जाने के बाद, जो कि औलीन (सबसे पहला) और असली मकसद (मुख्य उद्देश्य) है, यह बाकी नहीं रहता। उन्होंने फरमाया कि मुसलमाने- हिन्द को दोनों मसलों पर पूरी तौर पर हिस्सा लेना ज़रूरी और लाज़मी (अनिवार्य) है। एक में हिस्सा लेना दूसरे के मुनाफी (लाभ) नहीं है।

– मुकुट बिहारी लाल : भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन भाग-२, पृष्ठ-५६९

विचित्र हिन्दू

– पुरुषोत्तम योग

यह हिन्दू-मुस्लिम एकता की प्रतीक गाज़ी और शहीदों की मजारें।

भारत में सहस्रों कब्रें टेढ़ी-मेढ़ी ईटों और प्लास्तर के ढेर मात्र से लेकर करोड़ों रुपये की लागत से निर्मित्त मकबरें, दरगाहें, और मजारें सर्वत्र बिखरी पड़ी हैं, जिन पर प्रति सप्ताह छोटे बड़े मेले लगते रहते हैं और प्रति वर्ष उनकी हैसियत के अनुसार बड़े पैमाने पर उर्स अर्थात् उत्सव भी होते रहते हैं।

इन अवसरों पर कव्वालियाँ, बड़े-बड़े बाज़ार, चलते-फिरते सिनेमा, पशु मेले इत्यादि भी लगते हैं। जिनसे इन मज़ारों मकबरों इत्यादि के ट्रस्टियों को लाखों और करोड़ों रुपये वार्षिक की आय होती है। इन पर तीर्थ यात्रा करने और चढ़ावा चादर इत्यादि चढ़ाने वालों में ९०-९५ प्रतिशत सिर्फ हिन्दू होते हैं। इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि इस्लाम का एक बहुत बड़ा फ़िरका इस प्रकार की पूजा को बहुत बुरा समझता है।

स्वयं पैगम्बर साहब की मजार पर भी इस प्रकार की पूजा अर्चना की अनुमति सऊदी शासन द्वारा नहीं दी जाती।

इन मेलों, उर्सों और ज्यारतों (तीर्थ यात्रा) का हिन्दू-मुस्लिम एकता के और हिन्दू मुस्लिम संस्कृति की गंगा-यमुना मिश्रित संस्कृति के प्रतीकों के रुप में बहुत प्रचार किया जाता है।

मुख्य-मुख्य मज़ारों पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गवर्नर, मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रीगण इत्यादि चादर चढ़ाते, उनसे दुआयें माँगते, फोटो खिंचवा कर अपनी धर्मनिरपेक्षता के सबूत में विभिन्न समाचार पत्रों के अन्दर छपवाते हैं।

किन्तु वास्तविकता क्या है?

जिन लोगों की यह मज़ारें या मकबरें हैं उनमें से अधिकांश के नाम के साथ गाज़ी, शहीद, पीर, सैय्यद सूफी जैसे शब्द जुड़े होते हैं। इन पर जाने वाले अधिकांश हिन्दू इन शब्दों का हिन्दू शब्द, महात्मा, वीर, गुरु, देवता, भक्त इत्यादि का पर्याय समझते हैं, जबकि इनके वास्तविक अर्थ क्या हैं, देखिये-

कौन हैं यह लोग जो सैकड़ों वर्षों से इन मज़ारों में दफ़न हुए पड़े हैं और हिन्दुओं के इस असामान्य आदर के पात्र हैं? इन उर्दू, फारसी शब्दों का वास्तविक अर्थ निम्नलिखित है, देखिये-

गाज़ी - इस्लाम के लिए युद्ध करने वाला ऐसा वीर जिसने अनेकों मूर्ति पूजकों अथवा बहुदेवतावादियों के वध का पुण्य अर्जित किया है।

शहीद - जो इस्लाम की सेवा में काफिरों अर्थात् मूर्तिपूजकों अथवा बहुदेवतावादियों से युद्ध करते हुए मारा गया हो।

उपरोक्त अर्थों को समझ लेने पर यह बताना आवश्यक नहीं

कि यह मजार, मकबरें, दरगाह घोर हिन्दू विरोधी और हिन्दू धर्म को नेस्तनाबूद करने के लिये कृत संकल्प लोगों के हैं जो मरने के सैकड़ों वर्षों के पश्चात् भी हिन्दुओं को सफलतापूर्वक भ्रमित कर रहे हैं। इसके लिए यहां केवल दो-तीन उदाहरण देने ही पर्याप्त होंगे।

१. बहराइच में शहीदः सालार महमूद गाज़ी की मजार*।

यह सोमनाथ मंदिर को ध्वस्त करने वाले कुख्यात सुल्तान महमूद गजनवी की बहन का पुत्र था। उसकी भारत के राजाओं से एक ही माँग थी कि- इस्लाम स्वीकार करो अथवा तलवार।

(देखे ईलियट एंड डाउसन भाग-२ परिशिष्ट)

अंत में वह युद्ध में राजा सुहल देव के हाथों मारा गया। वहां का मुख्य तीर्थ स्थान सूरज कुंड बाद के मुसलमान शासकों द्वारा उसकी इच्छानुसार हथिया लिया गया।

२. लखनऊ में शहीदः खम्मनपीर बाबा।

यह शहीद सालार महमूद गाजी के मित्र थे और लखनऊ में हिंदू सेना द्वारा लड़ते-लड़ते मारे गये।

३. अजमेर में : मुइनुद्दीन चिश्ती-

यह भारत के सर्वाधिक सूफी संत समझे जाते हैं। सालार महमूद की मृत्यु के पश्चात् अजमेर पर फिर हिंदुओं का राज्य हो गया।

---

* **'गाज़ी मियाँ की पूजा और हिन्दू'** - नामक पुस्तक पढ़ें, जिसे आर्य जगत के उद्भट विद्वान श्री पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय, एम०ए० ने लिखा है, जिसका प्रकाशन हमारे यहाँ से ही हुआ है, आप अधिक से अधिक मंगाकर स्वाध्याय व प्रचार-प्रसार में सहयोग दें। - लाजपतराय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)

मीरात (ए) मसूदी (ईलियर एंड डाडसन भाग-२) परिशिष्ट के अनुसार-

मुइनुद्दीन चिश्ती मदीने से भारत का इस्लामीकरण करने की प्रेरणा लेकर मसूद की मृत्यु के लगभग २०० वर्ष बाद भारत में आकर अजमेर के अन्दर बस गया।

उस समय पृथ्वीराज चौहान (राय पिथौरा) का शासन काल था। चिश्ती ने राय पिथौरा के धर्म गुरु 'अजय पाल जोगी' को अपना शिष्य (मुसलमान) बना लिया। किन्तु पृथ्वीराज धर्म परिवर्तन के लिये तैयार नहीं हुआ।

अब मोहम्मद गौरी ने भारत पर चढ़ाई कर पृथ्वीराज को मार डाला। चिश्ती को प्रारम्भ में हिन्दुओं के विरोध का सामना करना पड़ा किन्तु कदाचित दिल्ली के मुस्लिम सुल्तान और दूसरे शासकों से निरन्तर मिलने जुलने और गहरे सम्बन्धों के कारण वह अजमेर में बैठकर हिन्दुओं का धर्मान्तरण करता रहा। इसने एक हिन्दू लड़की का भी धर्मान्तरण कर उस से विवाह किया। किन्तु सन्तान मुस्लिम पत्नी से ही हुई। ९७ वर्ष की आयु में चिश्ती की मृत्यु हुई।

पी.एम. कैरो की पुस्तक- दा शाइन एंड कल्ट ऑफ मुइनुद्दीन चिश्ती के अनुसार-

चिश्ती सैय्यद वंशी थे, कट्टर धर्मनिष्ठ मुसलमान थे और हज्ज कर आये थे। "उनके भारत आने से इस्लाम का मार्ग प्रशस्त हो गया और कुफ्र का अंधेरा मिट गया।"

अमीर खुर्द के शब्दों में-

इसकी तलवार ने उस कुफ्र की भूमि में मूर्तियों के स्थान पर मस्जिद, मेहराब और मिम्बर स्थापित् कर दिये। अब वहां आरती के स्थान पर सर्वत्र अजान ही सुनाई देती है।

४. अफज़ल खाँ कौन था?

यह औरंगजेब का वह सिपहसालार था जो शिवाजी को मारने गया था, किन्तु उनके हाथों खुद ही मारा गया।

मिस्टर बेग के कथनानुसार-

आज महाराष्ट्र में महाबलेश्वर से थोड़ा दूर एक भव्य दरगाह में उनका शव दबा पड़ा है। वह शिवाजी से राज्य छीनने का धर्म निरपेक्ष युद्ध तो भले ही हार गये किन्तु साम्प्रदायिक मोर्चे पर आज भी लड़ रहे हैं।

(मुस्लिम डिलेमा इन इण्डिया पृष्ठ ८८)

इस्लाम को भारत में फैलाने के प्रयास में सहस्रों मुसलमान शासक हार कर भी आज इस विचित्र हिन्दू समाज के पूज्य बने हुये हैं। आश्चर्य! महाद्दाश्चर्य!!

प्रत्येक हिन्दू को अपने धर्म ग्रन्थों की जानकारी होना अत्यावश्यक है।

इसी आशय से निम्न तालिका दी गई है, देखिये-

वेद	उपवेद	ब्राह्मण ग्रन्थ
१. ऋग्वेद	आयुर्वेद	एतरेय
२. यजुर्वेद	धनुर्वेद	शतपथ
३. सामवेद	गान्धर्व वेद	ताण्डय

४. अथर्ववेद अर्थवेद* गोपथ

वेदों के प्रातिशाख्य और अरण्यों (वनों) में रचित विभिन्न 'आरण्यक ग्रन्थ'

दर्शन शास्त्र

१. योग दर्शन	महर्षि पतन्जली
२. सांख्य दर्शन	महर्षि कपिल
३. वैशेषिक दर्शन	महर्षि कणाद
४. न्याय दर्शन	महर्षि गौतम
५. पूर्व मिमांसा	महर्षि जैमिनी
६. वेदान्त दर्शन	महर्षि वेद व्यास

उपनिषदें

१. ईश, २. केन, ३. कठ, ४. प्रश्न, ५. मुण्डक, ६. माण्डूक्य, ७. एतरेय ८. तैत्तरीय, ९. छान्दोग्य, १०. बृहदारण्यक, ११. श्वेताश्वेतरोपनिषद

वेदांग

१. शिक्षा	पाणिनीय (वर्णोच्चारण शिक्षा)
२. कल्प	धर्म सूत्र, ग्रह्य सूत्र, शुल्ब सूत्र
३. व्याकरण	अष्टाध्यायी - महाभाष्य
४. छन्द	पिंगल छन्दोसूत्र
५. निरूक्त	महर्षि यास्क

* यह अप्राप्य ग्रन्थ मूल (संस्कृत) रूप में हमारे द्वारा सर्वप्रथम प्रकाशित कराया गया है।

- अतुल गुप्ता (व्यवस्थापक)
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

६. ज्योतिष सूर्य सिद्धान्त

अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ

१. रामायण महर्षि बाल्मीकि
२. महाभारत महर्षि व्यास
३. मनुस्मृति महर्षि मनु (सृष्टि का प्रथम संविधान)

नोट– पौराणिक जगत में- वेद, उपनिषद, दर्शन आदि अनेकों की संख्या में माने जाते हैं, जिन्हें अनार्ष ग्रन्थों की संज्ञा दी गई है। परन्तु महर्षि दयानन्द की मान्यतानुसार उपरोक्त तालिका ही सत्य सिद्ध है, शेष अनार्ष कहे जाने वाले ग्रन्थ सत्य की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। अत: अप्रामाणिक हैं, उन्हें नहीं मानना चाहिये। अन्य अप्रामाणिक ग्रन्थ भी दर्शनार्थ हमारे यहां आपको देखने को मिल जायेंगे। यह सभी आर्ष ग्रन्थ आपको हमारे यहां मूल तथा कुछ ग्रन्थों के हिन्दी भाष्य भी प्राप्त हो जायेंगे, आप प्रकाशन से सम्पर्क करें।

निवेदक:
लाजपतराय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

समस्त प्रकार का वैदिक एवं अनुसंधान परक साहित्य प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद, पिन०-२०१००१ (उ० प्र०)
दूरभाष : ०१२०-२७०१०९५, ०१२०-२७०००४२
०९९१०३३६७१५, ०९८१०८१६७१५, ०९८७१२३०३२१

E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com
Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

यहाँ पर आपको मिलेगी स्वाध्याय करने के लिए वैदिक, प्रेरक, ज्ञान वर्धक , क्रान्तिकारियों की जीवनी,ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक PDF पुस्तकें ।

डाउनलोड करने के लिए टेलीग्राम एप्लिकेशन मे वैदिक पुस्तकालय (@Vaidicpustakalay)सर्च करके चैनल को ज्वाइन करें।

सामवेद अथर्ववेद